जून 2025

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

हर एक जीव शाश्वत सुख ढूंढता है। तो 'इसमें से आएगा, इसमें आएगा, यह लूँ, ऐसा करूँ,
बंगला बनवाऊँगा तो सुख आएगा, गाड़ी लूँगा तो सुख आएगा' ऐसा करते रहते हैं। परंतु कुछ भी सुख नहीं आता।
सच्चा सुख खुद के भीतर आत्मा में ही है। यानी आत्मा प्राप्त करेंगे तभी सुख प्राप्त होगा।

पूज्यश्री का U.K. सत्संग प्रवास : ता. 4 से 21 अप्रैल 2025

लेस्टर : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 4 से 6 अप्रैल 2025

बर्मिंघम : सेवार्थी शिबिर : ता. 7 से 9 अप्रैल 2025

हेरो (लंडन) : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 11 से 14 अप्रैल

वेस्टन सुपर मेर : U.K. शिबिर : ता. 17 से 21 अप्रैल

वर्ष : 20 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 236
जून 2025
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

बाह्य सुख - अंतर सुख का बैलेन्स

संपादकीय

इक्कीसवीं सदी में आज मनुष्य आधुनिक डेवेलपमेन्ट में चोटी के शिखर तक पहुँच गया है, जहाँ समग्र विश्व के लोग आज टेक्नॉलोजी और डिजिटल युग के साधनों में से मिलने वाले सुख में डुबे हुए हैं। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। भौतिक टेक्नॉलोजी का उपयोग संयम से हो, वह एक पॉज़िटिव साइड है, परंतु साथ में दूसरी तरफ आज का भौतिक विज्ञान 'आउट ऑफ बैलेन्स' होता जा रहा है। 'नॉर्मेलिटी का अनुपात बिगड़ने से 'पॉइज़न' (ज़हर समान) होता जा रहा है। आज इस भौतिक विज्ञान से बाह्यसुख बेहद हो गए हैं, तब दूसरी तरफ अंतरसुख सूख गया है!

आज के काल में जगत् में जहाँ देखो वहाँ सुख ढूँढने के पीछे अशांति बढ़ गई है। क्योंकि 'सुख' बाह्य सुविधाओं में माना है। जैसे कि, टी.वी., फोन, बंगला, कार में सुख माना है तो अंदर शांति कब मिलेगी? लोगों का देखकर स्पर्धा में पड़कर नकल करते हैं। बाह्यसुख न मिलें वहाँ तप चूक जाते हैं और उससे कल्पित दु:खों की जलन में जलते रहते हैं। उसे शांत करने के लिए फिर से मनोरंजन का कीचड़ लगाता है। भगवान ने कहा है कि अंतरसुख कम हो जाए और बाह्यसुख बढ़ जाए तो समझ जाना कि मरने वाला है।

मनोरंजन के साधनों में पत्ते खेलना, टी.वी.-मोबाइल देखना, इन सभी कुसंस्कारों से ज्ञान पर आवरण आता है। जिन्हें मोक्ष जाने की जल्दी नहीं है, अभी भी पचास-सौ जन्म बिताने हैं, उन्हें टी.वी.-मोबाइल में डूबने में हर्ज़ नहीं है। मनोरंजन यानी क्या? वहाँ पर खुश होते हैं, उछलकूद करते हैं, जैसे पानी उबलता है वैसे और वापस नीचे आने पर पहले जैसा था वैसा ही।

जीवन में मनुष्य को अपने लिए आवश्यक चीज़ और अनावश्यक चीज़ क्या है, उसका अंतर समझ लेना चाहिए। इस देह के लिए मुख्य तो हवा, पानी, रोटी, कपड़े, मकान, नौकरी-व्यापार इतना ही आवश्यक है। परंतु जगत् पूरा 'अन्नेसेसरी' (अनावश्यक) परिग्रह के सागर में डूबा हुआ है। परम पूज्य दादाश्री कहते हैं, कि हम ज़िंदगी भर, हाथ में लाखों रुपये होने के बावजूद भी गाड़ी, घड़ी, रेडियो, टी.वी., टेलीफोन नहीं लाए। आवश्यक चीज़ के लिए खर्च किया, बेवजह अनावश्यक खर्च नहीं किया। कोई चीज़ हमसे नहीं चिपकी। मेरी संपूर्ण स्वतंत्रता का मैंने अनुभव किया है, उसके बाद मुझे ज्ञान हुआ है।

यहाँ आत्मज्ञान है, वह रियल वस्तु है अर्थात् आत्मरंजन होता है, वहाँ तृप्ति होती है। इन पुण्यानुबंधी पुण्यशालियों के लिए ऐसा अक्रम मार्ग मिला है फिर एक मिनट भी समय कैसे बिगाड़ सकते हैं? यह पुण्य उदय में आया है, अत: पुण्य का दुरुपयोग अब नहीं करना चाहिए। इस पुण्य का सदुपयोग आत्मकल्याण के लिए ही करना चाहिए। हम सभी इसी जन्म में पाँच आज्ञा पालन करके आत्मरंजन में आकर निरंतर आत्मा के शुद्ध उपयोग में रह सकें, ऐसा पुरुषार्थ शुरू कर सकें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

बाह्य सुख - अंतर सुख का बैलेन्स

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

टी.वी., वह तो बदबूदार कीचड़, जलन शांत करने के लिए

दादाश्री : रविवार के दिन आपके नज़दीक में ही सत्संग होता है, तो क्यों नहीं आते?

प्रश्नकर्ता : रविवार के दिन टी.वी. देखना होता है न, दादाजी!

दादाश्री : टी.वी. से आपका क्या संबंध? यह चश्मा आ गया है, फिर भी टी.वी. देखते हो? हमारा देश ऐसा है कि टी.वी. देखना न पड़े, नाटक देखना न पड़े, वो सब यहीं का यहीं रास्तों पर होता रहता है न?

प्रश्नकर्ता : उस रास्ते पर पहुँचेंगे तब वह बंद होगा न?

दादाश्री : कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि मनुष्य व्यर्थ टाइम (समय) बिगाड़ रहे हैं। कमाने के लिए नौकरी पर जाना अनर्थ नहीं कहलाता। जब तक वह दृष्टि नहीं मिलती, तब तक यह दृष्टि नहीं छूटती न!

लोग शरीर पर बदबू वाला कीचड़ कब मलते हैं? उन्हें जलन हो तब, ऐसा टी.वी., सिनेमा, सब बदबूदार कीचड़ कहलाते हैं। उसमें से कोई सारतत्व नहीं निकलता। हमें टी.वी. के प्रति कोई विरोध नहीं हैं। प्रत्येक चीज़ देखने की छूट होती है लेकिन एक तरफ पाँच बजकर दस मिनट पर टी.वी. का कार्यक्रम हो और दूसरी ओर पाँच बजकर दस मिनट पर सत्संग हो, तो क्या पसंद करोगे? ग्यारह बजे परीक्षा हो और ग्यारह बजे भोजन करना हो तो क्या करोगे? ऐसी समझ होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : रात को देर तक टी.वी. देखते हैं, इसलिए फिर (बच्चे) सोते ही नहीं न!

दादाश्री : लेकिन टी.वी. तो आप खरीद लाए तभी देखते हैं न? आपने ही इन सब बच्चों को बिगाड़ा है! इन माता-पिता ने ही बच्चों को बिगाड़ा है, ऊपर से टी.वी. लाए! पहले ही क्या कम मुसीबत थी, जो एक और बढ़ाई!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दुनिया में रहने के लिए तो दुनिया का करना ही पड़ेगा, वर्ना ये लोग तो कहेंगे, कि 'बुद्धू हो'।

दादाश्री : दुनिया में रहने के लिए भोजन, साँस लेना, कपड़-वपड़े और मकान इतना ही आवश्यक है। अन्य चीज़ें आवश्यक नहीं है। संडास (पाखाने) की बहुत आवश्यकता है। यदि संडास नहीं होंगे तो आपको पता चल जाएगा। अगर सरकार ऐसा कानून बना दे कि पंद्रह दिन तक कोई भी संडास नहीं जाएगा तब सरकार से कहेंगे, 'आप कहो उतना टैक्स भर देंगे, लेकिन हमें संडास जाने दो'। अब जिसकी इतनी अधिक महत्ता है, फिर भी लोगों को कीमत नहीं है! सरकार संडास जाना बंद करवा दे तो कैसी दशा हो जाएगी?

प्रश्नकर्ता : बहुत बुरी दशा हो जाएगी।

दादाश्री : तो बल्कि सरकार का उपकार है कि संडास जाने देती है, बहुत अच्छा है!

रेडियो से मन का रंजन, यह फूलिशनेस

हमारे फ्रेन्ड रेडियो लाए थे। कहते थे, 'मैं दो रेडियो साथ में लाऊँगा।' मैंने कहा, 'मेरे लिए रेडियो मत लाना'। 'अरे भाई, तुम मनुष्य होकर यह रेडियो ढूँढ रहे हो? ये बाहर क्या कम हैं, यह इतना शोर तो होता है। यानी इतने शोर में तो आपको फुरसत नहीं होती, घड़ी भर शांति नहीं रहती, तो यह फिर से शोर?' यह रेडियो मुझे याद भी नहीं आया, कभी लेने का विचार भी नहीं आया। मैंने ऐसी कोई भी चीज़ आज तक नहीं ली है।

घर में चीज़ें ज़्यादा लानी हों, तब हीराबा कहती थीं, 'पर इसे फिर रखेंगे कहाँ, परेशानी क्यों बढ़ा रहे हो?' तब और हम भी एक मत वाले, गाड़ी सही चलती थी हमारी। अन्य कोई झंझट ही नहीं न!

मित्र कहते थे, 'रेडियो लाओ'। अरे भाई, यह माथापच्ची, पूरा कान फाड़ दें ऐसा रेडियो! और उसके भीतर बोलने वाले लोग कोई बात सर्टिफाइड नहीं बोलते। उसमें तो क्या सुनना? अरे, किसलिए यह रेडियो चाहिए? यह रेडियो किसलिए लोग ढूँढते हैं?

प्रश्नकर्ता : मन का आनंद।

दादाश्री : मन का रंजन करने के लिए तो हमारे मन को तो आनंद बेहद रहता है, तो रंजन से हमें क्या लेना-देना है भला? मुझे तो ऐसा लगता है कि इन फूलिश (मूर्ख) मनुष्यों के हाथ में यह ऐसा खिलौना आ गया है! ये इतनी ज़्यादा फूलिशनेश (मूर्खता) तो है और फिर ये खिलौने हाथ में दे दिए! बंदर के हाथ में वह देते हैं न, डुगडुगी, उसके जैसा है यह सब। यह कुछ भी मैं नहीं छूता था।

मूर्ख बनाते हैं ये रेडियो

रेडियो मैं सुनूँ तो मेरे टाइम का क्या होगा? लोगों से (उनकी) सुनने में ऊब जाते हैं, तो यह रेडियो फिर किसलिए? ऐसा कुछ नहीं होता हमारे पास। ये मेडनेस (पागलपन) हैं सारी।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें ये सब कुछ चाहिए और आपको नहीं चाहिए था उसका क्या कारण है?

दादाश्री : नहीं, यह तो आप लोगों का देखकर सीखते हो। मैंने लोगों का देखकर नहीं सिखा। मैंने एक पाई का दुरुपयोग नहीं किया, पूरी ज़िंदगी में। घड़ी तो मानों पहनी ही नहीं कभी भी। उसी तरह रेडियो भी देखा नहीं, उसे सुना ही नहीं। यह मूर्ख बनाने का काम है, मुझे तुरंत ही समझ में आ जाता था कि मूर्ख बनाते हैं ये रेडियो। ये सब रेडियो (लोग) गाते रहते हैं, वे पसंद नहीं आते और यह नया रेडियो यहाँ लेकर आया, भों-भों करे ऐसा। ये बाहर रेडियो शोर मचाते हैं न, वह पसंद नहीं आता। ये सभी लोग रेडियो ही हैं न! कोई तो ऐसा रेडियो होता है, जो हमसे कुछ बात करने आया हो और हम उसे कहें कि 'मैं सब बात समझ गया, अब बंद करो न!' तब कहता है, 'आप मेरी बात पूरी सुनो न!' अरे, रेडियो तो बंद हो सकता है, तू तो भाई बंद ही नहीं होता भला!

ये सभी रेडियो हैं, तो उनसे बल्कि कान फूटते हैं! ये सभी रेडियो जाते हैं न बाज़ार में, रास्ते में जाते हुए नहीं देखें रेडियो? देखें हैं या नहीं? और कोई न हो तब वह गधेसिंग है वह रेडियो बजाता है (होंची, होंची करता है), एकदम से! वह लंबकर्ण! हमारा तो कॉन्ट्रैक्ट का व्यापार

था न, तो पाँच सौ-पाँच सौ गधे होते हैं, मिट्टी डालने के लिए। वे भी फिर रेडियो बजाते थे, एक़दम से।

परवशता के साधन नीचे ले जाए

वह मेरा मित्र कहता है, 'रेडियो क्यों नहीं?' 'अरे भाई, जानवर जिसे नहीं रखते, उस रेडियो को मनुष्य सुनते हैं?' मैंने कहा।

प्रश्नकर्ता : दादा, अभिनय की कला भी है आप में। तत्त्वज्ञान के साथ कलाकार हैं, वह पता नहीं था।

दादाश्री : हाँ, कलाकार तो बहुत था और उसे भारी कलाकार कहा जाता है! बोधकला बहुत थी। बाद में ज्ञानकला हुई।

रेडियो लाओ, फलाना लाओ। अरे भाई, इन परवशताओं का अंत नहीं है, उसमें फिर इसकी परवशता बढ़ाई। अरे, क्यों परवश होते हो, बिना सोचे समझे!

रेडियो, मेरे मित्र ने मुफ्त में दिया था फिर भी मैंने वापस दे दिया था, दूसरे को दे दिया था। वह रेडियो तो रखा जाता होगा? मनुष्य रेडियो सुन सकता है? वह तो जो इन्द्रियगम्य है, जहाँ पर इन्द्रियगम्य सुख हैं, उसके लिए हैं। यानी अपने हिन्दुस्तान के अलावा बाहर इन्द्रियगम्य लोग हैं, उनके लिए ठीक है।

प्रश्नकर्ता : जी हाँ।

दादाश्री : वे (फोरिन) कषाययुक्त नहीं हैं, यह प्रजा कषाययुक्त है। इन्हें ऐसा रेडियो-वेडियो सुनना चाहिए? लेकिन वे घुस गए न! देखो न, ये भूत इन लोगों ने प्रोपगेन्डा (प्रचार) करके घुसा दिए। रेडियो नहीं, और कोई भी चीज़ मुझमें नहीं घुसी।

यों तो कॉन्ट्रैक्ट का व्यापार था इसलिए ला सकते थे। परंतु पहले से ही मुझे बल्कि ऐसा लगता था, कि ये किस तरह के मूर्ख लोग हैं, इन्होंने ऐसा क्या ढूँढ निकाला है? वे मुझे फूलिश लगते रहते थे। ये लोग कैसे फूलिश हो गए हैं! आगे बढ़ने के बजाय इस तरफ चल रहे हैं! यह क्या हिन्दुस्तान को अनुकूल आए ऐसी खोज़बीन है? ये तो नीचे गिराने की खोज़बीन हैं!

डेवेलपमेन्ट वाले नहीं छूते रेडियो

इन लड़को को देखो न, यहाँ कान पर रेडियो लगाकर नहीं रखते?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : बस और कुछ नहीं, इस तरह रेडियो लगाकर सुनते हैं क्योंकि नया-नया उदय में आया है, बेचारे के। नया डेवेलपमेन्ट है। यदि डेवेलपमेन्ट हुआ होता तब तो छूता ही नहीं। एक बार देख लेने के बाद लगाता ही नहीं। नयी चीज़ को एक बार देखना होता है, उसका कोई हमेशा अनुभव नहीं लेना होता। अनुभव तो लेकर ही आए हैं लेकिन ये लड़के सभी यहीं का यहीं लगाकर बैठे रहते हैं न, दिन भर ही। आपको क्यों पसंद नहीं है?

प्रश्नकर्ता : ये ही विचार मेरे मन में चल रहे हैं अभी।

दादाश्री : वे डेवेलप होकर आए हैं।

प्रश्नकर्ता (महात्मा को) **:** आपको पसंद है रेडियो-वेडियो सुनना? बिल्कुल कुछ भी पसंद नहीं है?

दादाश्री : नहीं, ये भी नहीं छूते, ये सब तो नहीं छूते।

प्रश्नकर्ता : तब तो सब डेवेलप्ड कहे जाएँगे!

दादाश्री : ये नहीं छूते, कोई नहीं छूता। इसमें से कोई नहीं छूता। ये तो नये कच्चे व्यक्ति लगाते रहते हैं यहाँ पर। मनुष्य में पहली बार आया हो तो वह लगाता है। मनुष्य जन्म में हज़ारों बार आया हुआ व्यक्ति कैसे लगाएगा? समझ में आ रहा है न आपको?

टाइम पास या जीवन व्यर्थ गँवाया?

मनुष्यों को टाइम ही कैसे मिलता है, यह रेडियो सुनने का? भीतर अपनी मशीन को इतने सारे कामों में लगाना है और यह रेडियो सुनने में कैसे टाइम चला जाता है?

वह दूर... वहाँ से दूसरे देश वाला बोलता रहता है अपने आप, मेरे कान दुःखते हैं यह सुनकर। हमें क्या लाभ? वे लड़ाई में लड़े, उसमें हमें क्या लाभ? और हिन्दुस्तान की लड़ाई के समय देख लेंगे हम लेकिन अभी बेवजह सिर पर ले लेकर घूमते रहते हो! आकर फिर मुझसे क्या कहते हैं? 'देखा दादाजी, वे चंद्र पर पहुँच गए न!' तुझे इससे क्या फायदा? अरे, तू क्यों उछलकूद कर रहा है, बेवजह? चंद्र पर पहुँचे या नहीं पहुँचे! यह अपने लोगों की मूर्छित अवस्था है। अपना सारा टाइम लोग यूज़लेस (बर्बाद) करते हैं।

इस हिन्दुस्तान देश में तो आठ आने खो गए हों, उसके लिए आठ घंटे तक ढूंढते रहें, वैसे भी लोग हैं! इसलिए हरकोई अपनी समझ के अनुसार समय का उपयोग करता है। यह मनुष्य देह बहुत मुश्किल से मिला है। बहुत कीमती है यह देह, परंतु जैसी समझ होती है, वैसा वे उपयोग करते हैं।

समझ के अनुसार उपयोग करते हैं न? यह जो करते हो उसे हम 'गलत है' ऐसा नहीं कहते। गलत तो इस दुनिया में कुछ होता ही नहीं। परंतु उसमें टाइम बिगड़ता है न? 'वेस्ट ऑफ टाइम' (समय की बर्बादी) है। कभी ही तो मनुष्यत्व प्राप्त हुआ हो, वह भी समझ के अभाव के कारण छिन जाता है और चार पैर, छह पैर, आठ पैरों वाला हो जाता है। भटकता रहता है और सारा समय मिट्टी में मिल जाता है, व्यर्थ चला जाता है।

रेडियो-टी.वी., वह तो मेडनेस है सारी

मुझे तो बचपन में रेडियो देखकर ऐसा हुआ था कि यह सब पागलपन कहाँ से घुस गया? इसमें क्या सुनना? हम लोग आमने-सामने बोलें, वह सुनना होता है, जीवित का। इन मरे हुए (मशीनरी) का क्या सुनना? यह तो सारी मेडनेस है। यह तो घनचक्कर बनाने का कारखाना है सारा।

प्रश्नकर्ता : और फिर स्टीरियो ले आए हैं। ये तो कहते हैं, दस लाख रुपये आ जाएँ तो टेलिविज़न ले आऊँगा।

दादाश्री : कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि मुझसे चिपकी हो। अरे भाई, ये सब तो बंदर के खेल हैं। अरे, क्या मैं बंदर हूँ? यह तो जड़ चीज़ को तू सुनता है? जड़ चीज़ें घों घों घों करती रहती हैं, उसे यह भाई फिर कान से लगाकर सुनता है! अरे, मर जाएगा। रेडियो सुनता है, यह टी.वी देखता है। अरे, क्या देखता है, उससे आँखों को बिगाड़ता है बेवजह? इन मनुष्यों में कहाँ बरकत है भला?

कुत्ते को टी.वी देखने बैठाएँ तो बैठगा? टी.वी देखेगा क्या? तब कुत्ते से पूछा होता तो

भी समझ में आ जाता! इसमें क्या देखना? इसे मेडनेस कहते हैं। हमारे वहाँ तो महेन्द्र भाई लाए हैं, तो हमें एक बार पाव घंटे बैठाया पर हमें रास नहीं आया। वह अनुकूल ही नहीं आता न! ये आँखें पूरी खिंच जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, एडजस्ट होना पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, एडजस्ट तो हो जाते हैं, लेकिन हमें अनुकूल नहीं आता न! एडजस्ट हो जाते हैं, हम विरोधी नहीं हैं। वे कहते थे, 'हमें लाना है खरीदकर।' मैंने कहा, 'लाओ भाई।' उसमें विरोध नहीं करते हम। लाओ, रखो, देखो। वे पूछें कि, 'इसमें नुकसान क्या है?' तब हम कहते हैं, वर्ना बार-बार हम क्यों किच-किच करें? सब अपना-अपना बिगाड़ते हैं।

इस सिनेमा में क्या देखना है? देखना तो यहाँ पर है सब कुछ, यह सब सिनेमा ही हैं न! बाज़ार में जाएँ तो बहुत लोग इस तरह आते-जाते रहते हैं, उन्हें देखते रहते हैं तो यह देखने से तो आँखे भी अच्छी हो जाती हैं। किसी का अच्छा मुँह दिख जाता है कभी-कभार।

टी.वी. के मोह से पचास-सौ जन्म बढ़ें

प्रश्नकर्ता : हम दिन में दो-तीन घंटे टेलीविज़न देखें तो उसे क्या कहा जाएगा, दादा?

दादाश्री : टेलीविज़न तो देखना ही नहीं चाहिए। वह देखने से उपयोग बस वहीं पर रहता है। दो उपयोग नहीं रह सकते आपको। देखने में कभी भी दो उपयोग नहीं रह सकते। सुनने में दो उपयोग रह सकते हैं, कान बंद किए जा सकते हैं। टेलीविज़न तो देखना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इन्डियन मूवी भी नहीं देखनी चाहिए?

दादाश्री : कुछ भी नहीं देखना चाहिए। टी.वी. तो आँखों की शक्ति तोड़ देता है और जहाँ पर आँखें खींचनी पड़ती हैं, आँखें आकर्षित होती हैं वहीं पर पूरा शरीर खींच जाता है, इसलिए अन्य किसी जगह पर उपयोग नहीं रह सकता।

मोक्ष की जल्दी नहीं है तो टी.वी. देखने में हर्ज नहीं है, अभी पचास-सौ जन्म लेने के बाद जाना हो तो भी हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : टी.वी. देखना और आपने जो सब कहा है कि 'देखो और जानो' और फिर अपने आप खत्म हो जाएगा, तो वह सही है या इसे छोड़ देना सही है?

दादाश्री : टी.वी. वगैरह नहीं होना चाहिए इसमें। टी.वी. देखने से बच्चों की आँखें खराब होती हैं। और चंदुभाई देखते हैं तो आप उन्हें ज़रा *ठपका* (उलाहना) देना। *ठपका* यानी कहना कि, 'चंदूभाई आप इस तरह टाइम क्यों बिगाड़ रहे हो?'

प्रश्नकर्ता : इन बच्चों की नॉलेज के लिए, वह 'वाइल्ड लाइफ' का आता है, नेचर से संबंधित आता है, न्यूज़ आती है, उसके लिए...

दादाश्री : वह ठीक है। बच्चे देखेंगे, आप दिखाना भी सही, फिर उठकर आप अपने काम में लग जाना। उन्हें उसमें लगाकर।

मोक्ष की जल्दी नहीं हो, वहाँ हर्ज नहीं है!

प्रश्नकर्ता : ताश खेलने, रमी खेलने और टी.वी. देखने से कौन सा कर्म बंधन होता है?

दादाश्री : अरे, अज्ञान कर्म और कौन सा कर्म? दर्शन मोहनीय।

प्रश्नकर्ता : दर्शन मोहनीय कर्म का बंधन होता है? आवरण आता रहता है?

दादाश्री : ज्ञान आवृत हो जाता है, ज्ञान पूरा चला जाता है और दर्शन मोहनीय आ जाता है। उसी से तो खड़ा हुआ है यह जगत्।

काल बिगड़ते होता है नुकसान

प्रश्नकर्ता : तो आप सिनेमा देखने गए थे?

दादाश्री : मैं बीस साल का था तब 1928 में एक बार सिनेमा देखने गया था। उस समय साइलन्ट सिनेमा थे, टॉकीज़ नहीं था। वहाँ पर मुझे प्रश्न हुआ था कि 'अरेरे! इस सिनेमा से अपने संस्कारों का क्या होगा? और क्या दशा होगी इन लोगों की?' सिनेमा देखने तो कई बार गया था, लेकिन एक बार ऐसा विचार आ गया कि यह सिनेमा तो अपने हिन्दुस्तान के सभी संस्कारों को ही हीन कर देगा!

पहले मैं सिनेमा का विरोधी था कि इससे तो लोगों के संस्कार खत्म होते जा रहे हैं। मुझे सिनेमा पर गुस्सा आता रहता था कि यह कलियुग घुस रहा है, आगे बढ़ रहा है, सिनेमा देखकर। फिर तो सिनेमा फैलने लगे और सिनेमा में लोगों की रुचि बढ़ी, तब मैं समझ गया कि कलियुग तेज़ी से आ रहा है। रात को चने लेने भेजो तो नहीं मिलते हैं न, दो बजे?

प्रश्नकर्ता : दो बजे नहीं मिलते, बारह बजे तक मिलते हैं।

दादाश्री : चने तो हैं। बेचने वाले भी हैं, सब हैं लेकिन काल बदल गया है। क्या हुआ? चने वाले की दुकान पर जाकर हम आवाज़ लगाएँ कि 'भाई, चने दो' तो कहेगा, 'सुबह आना भाई, अभी यह कोई समय नहीं है'। इसी प्रकार समय बदलता है न! महावीर भगवान को गए पच्चीस सौ साल पूरे होने को आए तब तक ज्ञानी पुरुष नहीं मिले हैं। मिला है कोई? क्योंकि काल बदल गया है अब लेकिन दुनिया एकदम से बदल या पलट नहीं जाती है। उसके बाद उसका असर होता रहता है। अब उल्टे असर हो रहे हैं।

फिर दूसरा विचार आया कि 'क्या ऐसा ही होना है इस हिन्दुस्तान का? क्या इस विचार का कोई उपाय है अपने पास? कोई सत्ता है अपने पास? कोई सत्ता तो है नहीं, तो फिर यह विचार अपने काम का नहीं है। जिसकी सत्ता हो, वह विचार काम का। जो विचार सत्ता के बाहर हो फिर भी अगर उसके पीछे लगे रहें तो वह इगोइज़्म है'।

साथ-साथ यह भी विचार आया था कि जो चीज़ इतनी स्पीड से देश को संस्कारहीन कर देती है, वही चीज़ फिर से उतनी ही स्पीड से संस्कारी भी बना देगी। जो बिगाड़ने वाले संयोग हैं, वही सुधारेंगे। यानी जितनी स्पीड से बिगाड़ते हैं उतनी ही स्पीड से सुधारेंगे और ऐसा ही होगा, देखना न!

प्रश्नकर्ता : ये साधन बहुत बड़े हैं इसलिए उतनी ही स्पीड से सुधार देंगे।

दादाश्री : उतनी ही स्पीड से सुधार देंगे इसलिए कोई भी चीज़ नुकसानदायक नहीं है। जब ऐसा काल आता है तभी नुकसान होता है।

जैसे भाव हों वैसा मिलता है

प्रश्नकर्ता : दादा, ये टेपरिकॉडर हैं, ये टी.वी हैं, पिक्चरें-फिल्में हैं, ये सभी चीज़ें मिलती हैं, तो पूर्व जन्म में कैसे भाव किए थे?

दादाश्री : हाँ, 'मुझे पढ़ना है' ऐसा भाव किया हो, उससे कॉलेज़ मिलता है और पुस्तकें मिलती हैं।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। तो ऐसी सब चीज़ें

मिलती हैं, उसमें कौन सा भाव होगा? ये सुख सुविधा के साधन हैं सब। यदि इस जन्म में, जो भी भोगना है वह पूर्व जन्म के भाव का परिणाम हैं तो पूर्व जन्म में टी.वी., रेडियो, कम्प्यूटर की खोज़बीन नहीं हुई थी, तो वे इस जन्म में भोगने के लिए कैसे मिलें?

दादाश्री : ऐसा नहीं होता। मन में भाव हो कि मुझे ये नयी-नयी चीज़ें सब जानना है इसलिए फिर नयी चीज़ें सब ढूँढता है। वह भाव का परिणाम है। बाकी टी.वी., रेडियो चाहिए, ऐसा पता ही नहीं होता न! परंतु नयी जो भी चीज़ उत्पन्न हुई हों, उनको मुझे जानना है इसलिए आँख की चंचलता, कान की चंचलता वह सब मिल जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो चंचलता से ये सब मिलता है परंतु भाव कौन सा होता है इसमें?

दादाश्री : यह देखना पसंद है, वह देखना पसंद है और भाव होते ही जाते हैं न, सब।

प्रश्नकर्ता : इन्द्रियगम्य भाव?

दादाश्री : हाँ। इन्द्रियगम्य भावना से ये सब ही। कैसे? मुझे क्यों नहीं मिलता? बचपन से घड़ी भी नहीं मिली।

अनावश्यक चीज़ लाए, वह 'मोह'

हमारे पास व्यवहार जागृति तो निरंतर होती है! कोई घड़ी की कंपनी या रेडियो की कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले गई है। हमने वे खरीदे ही नहीं। यानी कोई कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले गई है। मुझे लगता था कि इन सब का अर्थ ही क्या है? मीनिंगलेस (अर्थहीन) है। जिस घड़ी से मुझे परेशानी हो, जिसे देखते ही अंदर अत्यंत दु:ख लगे! जैसे कई बार पिताजी को देखने से चिढ़ होती है, पिताजी आ गए हों और हम कुछ भी पढ़ते नहीं हो, किताब एक तरफ रखकर किसी खेल में पड़े हों न, तब पिताजी को देखकर चिढ़ होती है, वैसे ही इस घड़ी को देखते ही चिढ़ होती है। तो फिर रखो घड़ी को एक तरफ! और यह रेडियो-वेडियो तो खुल्ला पागलपन है, 'मेडनेस' है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ये तो घर-घर में हैं। सभी घरों में है।

दादाश्री : नहीं, वह बात अलग है। वह तो उसकी समझ में ही नहीं है, भान ही नहीं वहाँ पर क्या हो सकता है? उसे ही मोह कहते हैं न! मोह किसे कहते हैं? अनावश्यक चीज़ लाना और आवश्यक चीज़ में कमखर्ची करना। उसे मोह कहते हैं! हमारी आवश्यक चीज़ ही नहीं रही अब।

प्रश्नकर्ता : घर के सभी लोगों को परिग्रह के कारण संग्रह करना है। मुझे छोड़ना है पर छूटता नहीं।

दादाश्री : हाँ, आपको पसंद नहीं है, सही बात है। परिग्रह छोड़ने से छूट जाएँ ऐसे नहीं हैं न! छूट जाएँ, ऐसे हैं? ये घड़ी आपकी कब छूटेगी? जबकि मैंने पूरी ज़िंदगी में घड़ी नहीं पहनी। लो, बोलो अब! ये रेडियो तो, मैं खड़ा भी न रहूँ। ये टाइम व्यर्थ जाता है। ये गुड, गुड, गुड बोलता रहता है! अरे अक्करमी, इसमें क्या सुनने लायक है भला? टाइम व्यर्थ जाता है। परंतु नासमझ के लिए यह सब काम का है। कुछ लोगों के लिए काम का नहीं है। मेरे लिए काम की नहीं हैं, ये कोई भी चीज़। इस दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि मुझे मोह उत्पन्न हुआ हो!

यह तो, कोई स्टोर नया लें न, तो मेरे जैसे लोग हों न, तो वहाँ व्यापार करें तो चलेगा नहीं।

कोई दिखाई ही नहीं देगा। दुकान ही नहीं चलेगी न, बेचारे की। मेरे जैसे (लोगों) की सोसायटी हो न, उस सोसायटी में दुकान खोलें तो कैसे चलेगी उसमें? क्योंकि मैंने घड़ी ही नहीं खरीदी कभी भी या रेडियो नहीं लिया। शायद ही पेन खरीदा हो तो, वर्ना पेन्सिल से लिखता हूँ या इन होल्डर से लिखता हूँ।

रात को फोन करने को मना ही कर दिया

मुझे कनुभाई कहते हैं, 'हम फोन लेंगे?' मैंने कहा, 'आराम से सोते हैं। घर में किसी को नींद नहीं आ रही हो और फिर वह आराम से सो जाए और उतने में घंटी बजे, ऐसा काम क्यों करें?' तब कहा, 'फोन के बगैर क्या करोगे? आज-कल तो व्यवहार ही हो गया है न।' तब मैंने कहा, 'साथ वाला रखता है न! और उसे पता दे रखा है'। उसे रात को तीन बजे फोन आए तो वह सुनता है और सुबह हमें बता देता है। तब हम उसे धन्यवाद देते हैं, उपकार मानते हैं। और हम उसका उपकार चुका भी देते हैं क्योंकि वह बेचारा तीन बजे रात को फोन सुनता है और सुबह फिर हमें बताता है। बताता है या नहीं बताता?

प्रश्नकर्ता : बताता है।

दादाश्री : हमें बताता भी है कि 'रात को तीन बजे फोन आया था! मुझे तो रात को नींद नहीं आती और ज़रा झपकी लगी उतने में यह फोन आ गया।' कल्याण हो गया, भाई!' मैं पहले ही जानता था।

फिर भी कभी किन्हीं संयोगों में, व्यापार में ऐसा लगे, कि फोन रखने की ज़रूरत पड़ सकती है और कोई फोन रखे तो उसके लिए हम मना नहीं करते और मेरे मना करने से सभी फोन न रखे, ऐसा नहीं हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : तब फिर मेरे रूम में फोन रखा हो इन लोगों ने, तो फोन पर जिनके साथ बात होती थी न, उनसे कह देता था कि, रात को मेरी स्थिति अच्छी नहीं रहती, तबियत की अनुकूलता नहीं है, इसलिए रात को फोन मत करना, ऐसी मेरी विनती है। यदि रात को कोई फोन करना हो, तो मन में तय करना कि, सुबह ही करेंगे अब। बहुत जल्दी हो, तब भी ऐसा तय करना कि सुबह ही करेंगे। अतः रात को फोन करने से मना ही कर दिया था सभी को, मेरे पास जो आते थे उनको।

समझो कि यह शौक की चीज़ नहीं

मैंने कहा, फोन की बला कहाँ लगाएँ? हम आराम से सो गए हों तो.. ज़रूरत लगती होगी तो आएगा अपने यहाँ, हमें नहीं लगती। जिसे लगती होगी तो यहाँ आएगा। नहीं लगती होगी तब तो आएगा ही नहीं और हमें कुछ ज़रूरत लगती नहीं। तो सभी ऑफिसर कहते थे, कि 'आप फोन ले ही, लो'। मैंने कहा, 'ये ऑफिसर तो सभी शौक की खातिर ताकि उनका रौब बढ़े, ये रौब वाले रौबदार लोग हैं। जबकि हम मामूली व्यक्ति, चैन से सोने वाले! चैन से रात भर अपनी स्वतंत्रता से सोते हैं। कोई मच्छर भी (हमारी नींद में) खलल न करे। तो वह फोन कौन रखे? घंटी बजे कि परेशानी!

घंटी बजी यानी नींद में खलल पड़ी। कनुभाई से कहा, 'हमें नहीं चाहिए खलल।' शायद खटमल-पिस्सू खलल करें या मच्छर खलल करें, वह तो अनिवार्य है, वह ऐच्छिक नहीं है। जबकि यह तो ऐच्छिक खलल, रौब जमाने के लिए। हम बाद में गाड़ी क्यों नहीं रखते थे? पहले गाड़ी रखते थे। तब ड्राइवर कहता, 'साहब, फलाने पार्ट टूट

गए हैं।' मैं तो नाम भी नहीं जानता था। बाद में मुझे लगा, यह तो फँसाव है। फँसाव तो वाइफ के साथ करने जैसा है! उससे बच्चे हो गए तो हो गए! बाज़ार (फाइलें) बनाना हो तो एक बाज़ार बनाने जैसा है! एक बाज़ार, दो-चार बाज़ार नहीं चाहिए। कितने बाज़ार सिर पर लेकर घूमते रहें? यह तो सब कॉमनसेन्स की बात है। हाँ, वह ड्राइवर निकाल लेते हैं पेट्रोल। कहता था, 'पेट्रोल डालना है, चाचा।' चाचा कुछ नहीं जानते थे। ये कैसी पीड़ा? और फिर संयोगवशात् ऐसा कहते हैं, कि गाड़ी लाओ। नहीं ऐसा भी नहीं, संयोगवशात् परंतु यह खलल तो घुसने नहीं देते। फ्री ऑफ कॉस्ट दें तब भी 'नहीं, भाई, खलल नहीं चाहिए।

आपको समझने की ज़रूरत है। मेरी बात आप सभी को स्वीकार करने की ज़रूरत नहीं है परंतु इतनी बात समझ लो कि यह शौक की चीज़ नहीं है, यह खलल की चीज़ है, इतना समझ लेना। यानी उसके प्रति प्रीति भाव मत करते रहना। हे फोन! तेरी वजह से ही मैं जीवित हूँ, ऐसा मत करना। यह खलल वाला है, ऐसा जानना। नींद में खलल करे। हमारे दो रूम हैं न, तो रात में बंद करने के बाद कोई खटखटाने वाला या आवाज़ लगाने वाला नहीं आता था। अगर कभी आवाज़ लगाने वाला आता तो दिन में आता, रात में नहीं आता।

मैं गाड़ी में पड़ता ही नहीं न

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने कहा, कि आप पहले गाड़ी रखते थे, तो किस साल में? किस साल में लाए थे?

दादाश्री : वह 1946 की साल में।

प्रश्नकर्ता : उसे कांतिचाचा (दादा के भागीदार) चलाते थे?

दादाश्री : वे खुद ही। रौब जमाने के लिए वे गाड़ी ले आए थे।

प्रश्नकर्ता : आपने नहीं चलाई थी कभी भी?

दादाश्री : मुझे तो आती ही नहीं थी न! मैं पड़ता ही नहीं था न, उसमें। मुझे तो ये आत्मा की बाबत आती थी, अन्य कुछ आता ही नहीं था।

प्रश्नकर्ता : वही सही है न!

दादाश्री : और वे भी मुझे मना करते थे बेचारे, कि 'आप इसमें मत पड़ना, आपका काम नहीं है। ये हार्ड लेबर और हार्ड दिमाग हो उसका काम है। आपका हार्ड लेबर भी नहीं है और हार्ड दिमाग भी नहीं है। आपका कोमल हृदय, कोमल दिमाग।'

हमें तो हमारे भागीदार की रेखा बहुत ही अच्छी थी, वे गाड़ी के बगैर घूमते ही नहीं थे। हमारी तो ऐसी रेखा-वेखा मिले ही नहीं। परंतु उनकी रेखा से गाड़ी आती थी और हमें भी घूमने को मिलता था।

आवश्यक और अनावश्यक की भेदरेखा

पूरी ज़िंदगी चली गई फिर भी (व्यापार के काम के लिए) नयी गाड़ी लाए ही नहीं, सेकन्ड हैन्ड (इस्तेमाल की हुई) गाड़ी लाए थे, पैसे होने के बावजूद बचपन से कॉन्ट्रैक्ट का व्यापार था इसलिए घड़ी लाने के पैसे थे, रेडियो लाने के पैसे थे, परंतु घड़ी लाया ही नहीं, ज़िंदगी भर और न ही मेरी ज़िंदगी में रेडियो देखा क्योंकि मुझे ज़रूरत नहीं थी इसलिए। पैसे तो थे, परंतु रेडियो की मुझे ज़रूरत नहीं थी। हाथ में लाखों रुपये आने के बावजूद कुछ नहीं लाया। कभी चार आने भी मैंने अकारण खर्च नहीं किया। अकारण खर्च नहीं किया, अनावश्यक। आवश्यक चीज़ के लिए खर्च होते हैं। कैसे?

प्रश्नकर्ता : आवश्यक।

दादाश्री : आवश्यक चीज़। आवश्यक चीज़ और अनावश्यक चीज़, उनकी भेदरेखा जाननी चाहिए। ऑफिसर के तौर पर उनकी प्रतिष्ठा के हिसाब से चाहिए, कपड़े-वपड़े सब कुछ चाहिए, घड़ी भी चाहिए, परंतु अनावश्यक चीज़ें बहुत इकट्ठी की हैं। आवश्यक तो ठीक है, कि ज़रूरत जितना। नेसेसिटी (आवश्यक), मोस्ट नेसेसिटी (बहुत आवश्यक) कहा जाता है। कैसा? आवश्यक शब्द समझ गए आप?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ गए।

दादाश्री : उतनी चीज़ों का ही खर्चा। बाकी तो मोह है सब। हाँ, आवश्यक चीज़ की ज़रूरत है। एक तो भोजन है। वह फूड (भोजन) कैसा होना चाहिए फिर? शरीर को पोषण मिले वैसा, पोषक तत्त्वों वाला। फिर कपड़े चाहिए। पड़े रहने के लिए कमरा चाहिए और पत्नी चाहिए। वह कपड़े प्रेस करने वाली इस्त्री नहीं, शादीशुदा, मेरिज (शादी) की हुई होनी चाहिए। ये सब कुछ चाहिए। ये आवश्यक हैं। कोई साधु हो, उसने पूर्व जन्म में भाव किए हों कि मुझे ब्रह्मचर्य ही पालन करना है, तो उसकी पत्नी नहीं होती। उसने भाव तय किया हो, वैसी चलती है दुकान। उसे अन्य कोई ज़रूरत ही कहाँ होती है?

भौतिक वाले की नकल करके, क्या ही मानते हैं

लोगों को तो खुद के संपूर्ण हित का पता ही नहीं है। इन्हें तो शारीरिक हित का पता है, भौतिक हित का पता है लेकिन अध्यात्मिक हित का उन्हें पता नहीं है इसलिए भौतिक का ही कार्य करते हैं!

नया पेन्ट पहनकर दर्पण में देखता रहता है। 'अरे, दर्पण में क्या देख रहा है?' यह किसकी नकल कर रहा है, वह तो देखो! अध्यात्म वाले की नकल की या भौतिक वाले की नकल की? यदि भौतिक वाले की नकल करनी हो तो वे अफ्रीका वाले हैं, उनकी क्यों नहीं करते? लेकिन ये तो साहब जैसे दिखें इसलिए नकलें की। लेकिन तुझमें बरकत तो है नहीं! किसलिए 'साहब' बनना चाहता है? लेकिन साहब बनने के लिए यों दर्पण में देखता है, बाल जमाता रहता है और खुद मानता है कि अब ऑलराइट (ठीक) हो गया हूँ। फिर पतलून पहनकर ऐसे पीछे थपथपाता रहता है। अरे, किसलिए बिना काम के मारता रहता है? कोई बाप भी देखने वाला नहीं है। सभी अपने-अपने काम में पड़े हुए हैं। अपनी-अपनी चिंता में पड़े हुए हैं। तुझे देखने के लिए कौन फालतू है? सभी अपनी-अपनी झंझट में पड़े हुए हैं लेकिन खुद अपने आपको न जाने क्या ही मान बैठा है! मन में मानता है कि यह तीन सौ रुपये मीटर का कपड़ा है, इसलिए लोग मेरी क़ीमत करेंगे लेकिन इसे देखने के लिए कोई फालतू नहीं है न! फिर भी मन में फूला नहीं समाता, और थोड़ा भी घर से बाहर जाना हो न, तो पेन्ट बदलता रहता है। 'एय, दूसरी पेन्ट लाओ!' फिर कहेगा, 'यह नहीं, टेरेलीन की पेन्ट लाओ।' ये लोग क्या ऐसे-वैसे हैं! अरे, क्या मान लिया है तूने यह? तुझे देखने के लिए कोई बाप भी फालतू नहीं है। तुझमें देखने जैसा है ही क्या? लेकिन फिर भी अच्छी पेन्ट पहनकर मन में न जाने क्या मानता रहता है! ऐसा है यह जगत्!

इस काल की बातें तो हैं न, मैंने ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं देखा कि जिसकी बात करेक्ट हो। आधे पागल जैसे, हाफमेन्टल लोग हैं इसीलिए पहले एक बार तो, इनकी बातों को उतरने ही मत देना, पहले जाँच करना। वर्ना यदि उतरने दोगे न, तो आपको इफेक्ट होगा, यानी यह आधे पागल जैसों का काल है।

अंतर सुख का बैलेन्स मत तोड़ना

जगत् पूरा 'अन्नेसेसरी' (अनावश्यक) परिग्रह के सागर में डूब गया है 'नेसेसरी' को भगवान परिग्रह नहीं कहते हैं इसलिए हर एक को खुद की 'नेसेसिटी' कितनी है, यह निश्चित कर लेना चाहिए। इस देह को मुख्य किसकी ज़रूरत है? मुख्य तो हवा की। वह उसे हर क्षण फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) मिलती ही रहती है। दूसरा, पानी की ज़रूरत है। वह भी उसे फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता ही रहता है। फिर ज़रूरत खाने की है। भूख लगी यानी क्या कि फायर (अग्नि) हुई, इसीलिए उसे बुझाओ। इस 'फायर' को बुझाने के लिए क्या चाहिए? तब ये लोग कहते हैं कि 'श्रीखंड, बासुंदी!' अरे नहीं, जो हो वह डाल दे न अंदर। खिचड़ी-कढ़ी डाली हो तब भी वह बुझ जाती है। फिर सेकन्डरी स्टेज (दूसरे तबक़े) की ज़रूरत में पहनने का, पड़े रहने का वह है। जीने के लिए क्या मान की ज़रूरत है? यह तो मान को ढूँढता है और मूर्छित होकर फिरता है। यह सब 'ज्ञानी पुरुष' के पास से जान लेना चाहिए न?

एक दिन यदि नल में चीनी डाला हुआ पानी आए तो लोग ऊब जाएँ। अरे, ऊब गए? तो कहें, 'हाँ, हमें तो सादा पानी ही चाहिए।' ऐसा यदि हो न तो उसे सच्चे की क़ीमत समझ में आए। ये लोग तो फेन्टा और कोकाकोला खोज़बीनते हैं! अरे, तुझे किसकी ज़रूरत है वह जान ले न! शुद्ध हवा, शुद्ध पानी और रात को खिचड़ी मिल गई तो यह देह शोर मचाता है? नहीं मचाता। इसलिए ज़रूरतें क्या है, इतना निश्चित कर लो। जबकि ये लोग खास प्रकार की आइस्क्रीम ढूँढेंगे! कबीर साहब क्या कहते हैं?

'तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी फेल।'

'अन्नेसेसरी' के लिए बेकार ही भागदौड़ करता है, वही 'फेल' कहलाता है। तू हिन्दुस्तान में रहता है और नहाने के लिए पानी माँगे तो हम तुझे फेल नहीं कहेंगे?

'अपने फेल मिटा दे, फिर गली-गली में फिर।'

इस देह की ज़रूरतें कितनी? शुद्ध घी, दूध चाहिए। जबकि वे शुद्ध नहीं देते और पेट में कचरा डालते हैं। वे फेल किस काम के? ये सिर में क्या डालते हैं? शेम्पू, साबुन जैसा नहीं दिखता और पानी जैसा दिखता है, ऐसा सिर में डालेंगे। इन अक्ल के खज़ानो ने ऐसी खोज़बीन की कि जो फेल नहीं थे वे भी फेल हो गए! इससे अंतर सुख घट गया! भगवान ने क्या कहा था कि बाह्य सुख और अंतर सुख के बीच में पाँच-दस प्रतिशत फर्क होगा तो चलेगा, लेकिन यह नब्बे प्रतिशत का फर्क हो तो ऐसा नहीं चलेगा। इतना बड़ा होने के बाद फिर वह फेल होता है! मरना पड़ेगा? लेकिन ऐसे नहीं मरा जाता और सहन करना पड़ता है। ये तो बिल्कुल फेल ही हैं, 'अन्नेसेसरी' ज़रूरतें खड़ी की हैं।

एक घंटा बाज़ार बंद हो जाए तो लोगों को चिंता हो जाती है! अरे, तुझे क्या चाहिए कि तुझे चिंता होती है? तो कहे कि, 'मुझे ज़रा आइस्क्रीम चाहिए, सिगरेट चाहिए'! यह तो फेल ही बढ़ाया न! यह अंदर सुख नहीं है, इसीलिए लोग बाहर ढूँढते रहते हैं। भीतर अंतर सुख की जो पूंजी थी, वह भी आज चली गई है। अंतर सुख का बैलेन्स मत तोड़ना। यह तो जैसे अच्छा लगे वैसे *सिलक* (पूंजी) खर्च कर डाली। तो फिर अंतर सुख का बैलेन्स ही किस तरह रहेगा? नकल करके जीना अच्छा या असल? ये बच्चे एक-दूसरे की नकल करते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप ऐसा कहते हैं कि

मनुष्य को अपनी खुद की ज़रूरतें इतनी अधिक कम करनी चाहिए, जिससे वह शांति से जी सके?

दादाश्री : ऐसा है न, मनुष्य की नेसेसिटी क्या है? जिसे आवश्यक कहते हैं। आवश्यक यानी अवश्य ज़रूरी ही है। कोई मना नहीं कर सकता। वह तय करना चाहिए और इससे अधिक, यों ही लोगों को दिखाने के लिए या यों ही अपने रौब के लिए लाते हैं, लेकिन वह अनावश्यक होता है।

अर्थात् ज़रूरत ही दु:खदायी है, ऐसा मुझे पहले से समझ में आ गया था। परिग्रह ही बोझ है और वही दु:खदायी है, ऐसा समझ में आ गया था, इसलिए ये सब कुछ दु:खदायी लगता है।

स्पर्धा नहीं, हमारा अलग ही कैल्क्युलेशन

इस हिन्दुस्तान में दु:ख है ही नहीं, परंतु इस नासमझी से ही दु:ख हैं ये सब। वास्तव में दु:ख है ही नहीं, दु:ख जैसी चीज़ ही नहीं है। ये जो दु:ख हैं वे सब इन्वाइटेड दु:ख हैं और कल्पित दु:ख हैं। लोग स्पर्धा में पड़ गए। इससे तो मैं अच्छा दिखाई दूँ, इससे तो मैं अच्छा दिखाई दूँ। कोई नहीं दिखा।

ये इन्वाइटेड (आमंत्रित) दु:ख हैं इन मनुष्यों के, ऐसा आपको समझ में आता है?

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है।

दादाश्री : जबकि इन्वाइटेड दु:ख मैंने उत्पन्न ही नहीं किए। मेरा कैल्कुलेशन दुनिया से उल्टा था। मुंबई में यों दो रूम हों न, वे हमेशा इच्छा करते रहते हैं कि तीन होते तो अच्छा होता। इच्छा किसकी करते रहते हैं? दो रूम वाला तीन रूम की और तीन रूम वाले से पूछें, तब चार रूम की बात करता है, चार रूम वाला पाँच रूम की बात करता है। पाँच रूम वाला छ: रूम लेने का कहता है। पाँच रूम वाला कहता है, एक रूम कम है मेरा। छ: रूम वाला सात रूम की, सात रूम वाला आठ रूम की। मैंने कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखा कि जो ऐसा कहे कि मुझे कुछ नहीं चाहिए। सभी के अंदर खटकता ही रहता है। पति नहीं बोलता तो पत्नी बोल उठती है, कि एक रूम कम है। तीन बेडरूम तो चाहिए हमारे यहाँ, बड़े लोग हैं। तब मैं क्या देखता था, कि दो रूम हैं न, तो एक रूम वाले की दशा देखकर आता था, कि ये बेचारा कैसे रहता होगा? इससे तो अपना कितना अच्छा है!

दूसरों का देखकर खुद कुछ भी न करते हों तो सुख ही है सारा। दूसरों का देखकर चलें, ऐसे लोग हैं भीतर थोड़े बहुत?

प्रश्नकर्ता : सभी ऐसे ही हैं। वह तो सब ठीक है।

दादाश्री : दूसरों का देखकर मैं एक सैकन्ड भी नहीं चला, पूरी ज़िंदगी ही नहीं चला। अरे, वे लोग कुछ भी करें, हमें क्या लेना-देना? हमने अपनी लाइन खींची है, वह करेक्ट (सही) है। हम लोगों की नकल करने आए हैं यहाँ? हम तो असल लेकर आए हैं, नकल-वक़ल करने नहीं आए।

हमारी नकल करे तो काम की

मैं तो कभी भी किसी का देखकर नकल करता ही नहीं था न! मैं जानता था कि हम करार करके आए हैं, जो है वह करेक्ट।

मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में किसी की भी नकल की ही नहीं। किसी भी चीज़ में, किसी भी बाबत में मैंने कभी भी किसी की कभी भी नकल ही नहीं की है।

वह कूएँ में गिरे, परंतु हमें कूएँ में गिरकर क्या काम है? अगर वह पहाड़ पर चढ़े, हिमालय

पर चढ़े, उसमें शक्ति हो तो। हम में शक्ति न हो और हिमालय पर चढ़ेंगे तो बीमार पड़ जाएँगे। लोगों का देखकर मत करना। अरे, नकल तो करना ही मत। इस जगत् में किसी की भी नकल मत करना। लोग ही नकली हैं, तो तू नकली की नकल मत करना। कोई असल हो, उसकी यदि नकल करें तो बात काम की है। हम असल हैं। हमारा एक-एक शब्द असल है। हमारी बात असल है। असल की नकल करें तो काम का! ये तो लोग ही नकली हैं। अब, इन नकली की नकल क्यों करनी है भला? लोग नकली हैं, ऐसा नहीं लगता? नकली की नकल करेगा तो फँस जाएगा। उसने बंगला बनाया है तो आप भी बनवाओ? अरे भाई, उसके बंगले का आपको क्या करना है? आपकी अपनी अभी आज की ज़रूरत है, नेसेसिटी है वह पूरी होती है। अभी संतोष था घर में, तो फिर बंगला देखने से असंतोष हो गया। उसका बंगला देखकर आने से। और अपने लोग भी ऐसे हैं। उद्‌घाटन करके बंगला दिखाते हैं सभी को इसलिए उस भाई ने न देखा हो फिर भी वापस अंदर से जाग्रत होता है। वे उद्‌घाटन करके, वापस इनका जाग्रत करते हैं।

नकल करनी है तो लोगों की क्यों करते हो? करो न भैंस की! उसे है ज़रा सी भी चिंता, कपड़े-वपड़े हैं कुछ भी? वह असली है। ये तो बस में जाने के लिए जल्दी, ऑफिस (जाने) में जल्दी और घर वापस आने में जल्दी! ये तो बंधन में हैं, फिर भी जल्दी। ऑफिस भी बंधन है, तो वहाँ जाने में भी जल्दी! ये भैंस कैसी हैं कि जहाँ बंधन है वहाँ धीरे-धीरे जाती हैं।

अत: बचपन से मेरा स्वभाव ही ऐसा है कि नकल किसी की नहीं करनी है। अच्छा हो या बुरा हो, अपना ही होना चाहिए। भले ही मैं बैकवर्ड चला गया होऊँगा, परंतु अपने आप पर ही रहा हूँ। संसार में नहीं आया तो भी कोई हर्ज़ नहीं, यह तो आया न! संसार में नहीं आया, परंतु यह तो आया ही है न! संसार का क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : यह तो सभी को नहीं आता न! यह आना मुश्किल है।

दादाश्री : यह आना मुश्किल है। इसलिए मैं तो ऐसा ही खोज़बीनता था।

हिताहित का भान तो खुद को स्वतंत्र होना चाहिए। मैं क्या करूँ तो सुखी और क्या करूँ तो दु:खी? सत्‌युग में लोगों को व्यवहार के हिताहित का भान था। वहाँ पर अनाचार नहीं थे, खुद सदाचारी थे इसलिए हिताहित का भान उत्पन्न होता था। अभी तो सब जगह अनाचार है, वहाँ कहाँ से हिताहित का भान उत्पन्न होगा?

मनोरंजन का आनंद लेने वाले दो प्रकार के दर्दी

प्रश्नकर्ता : आजकल हम देखें तो, आप जिन देशों में घूमकर आए वहाँ अशांति कैसे उत्पन्न करें यही मानों ध्येय है उनका, उनका वर्तन पूरा ऐसा दिखाई देता है। टी.वी. चाहिए, रेडियो चाहिए, यह चाहिए, बाकी सब सुविधाएँ चाहिए, कार चाहिए। फिर उन्हें शांति कब मिलेगी? ये सब कुछ इकट्‌ठा करते हैं। भौतिक चीज़ें सारी चाहिए।

दादाश्री : ऐसा है न, दो प्रकार के दर्दी हैं; एक हैं, वे अहंकार के दर्दी। यानी अपना मान दिखाने के लिए रेडियो चाहिए और फलाना चाहिए जबकि एक को रेडियो सुने बिना तो चैन नहीं आता रात में। वे ऐसे दर्दी हैं कि जिन्हें उसके बिना चैन नहीं आता। नाटक (सिनेमा) का एक गीत-वीत गाए तब फिर उन्हें मस्ती में नींद आती है, वर्ना सब काटता है। यानी ये दर्द हैं दो प्रकार के। यह चाहिए, वह चाहिए वे। इसमें खास करके

मान के दर्द ज़्यादा हैं अपने यहाँ और फिर वे एकाकर हो जाते हैं, लेपायमान हो जाते हैं। मान के दर्द में से लेपायमानपना उत्पन्न हो गया। अब, मैं तो जानता था कि ये सब फायदेमंद हो नहीं हैं तो उसके लिए हम झंझट ही क्यों करें? इसलिए मैंने तो भजना ही नहीं की उसकी।

सुविधाएँ बनाएँ आरामपसंद

बात को समझना है, इसमें कोई और झंझट काम ही नहीं आती न? हमें तो, जितनी हो सके उतनी *उपाधि* (दु:ख) कम करनी है। यह तो, मैंने खुद पंखे का अनुभव किया है कि मुझे क्या होता है? पहले पंखा नहीं रखता था। 1956 तक तितिक्षा नामक गुण का विकास किया था। हमेशा एक दरी पर सो जाता था और पंखा नहीं रखता था। जब सारे मित्र आते थे तो वे कहते थे कि, 'आप पंखा नहीं रखते हैं क्योंकि आप तो तपस्वी पुरुष हैं लेकिन हमारा क्या होगा?' तब मैंने कहा कि, 'चलो लगाते हैं।' पंखा लगाने से फिर यह शरीर आरामपसंद हो गया।

एक किसान रोज़ जूते पहने और फिर अगर कभी जूते नहीं हों तब उसके पैर जलेंगे । वर्ना शरीर ऐसा बन जाता है कि जले ही नहीं। अत: अब आरामपसंद हो गए हैं तो परवश होना पड़ता है। जब पंखा नहीं हो तो परवश होना पड़ता है और मुझे उपयोग बाहर रखने में परेशानी होती है। तब क्या हुआ, मैं अपनी वह बात बता रहा हूँ। अत: इस बात को आप समझना। पंखा बंद मत कर देना लेकिन यह पंखा हितकारी नहीं है, ऐसा मानना।

अपने महात्माओं के लिए वह अनुभव हितकारी नहीं है। बाहर के लोगों को तो हम नहीं कह सकते। बाहर के लोग बाह्य सुख ढूँढते हैं और आप आंतरिक सुख ढूँढते हो, सनातन सुख ढूँढते हो। अत: यह तो मेरे अनुभव की बात बताई।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ पंखा ही क्यों, कई चीज़ें हितकारी नहीं हैं।

दादाश्री : अन्य चीज़ें नहीं देखनी हैं। यह पंखा ही अतिरिक्त है। अन्य चीज़ें तो आपको डायरेक्ट असर नहीं करती। सिर्फ यही एक डायरेक्ट असर करता है। अन्य चीज़ों में हर्ज नहीं है। बाकी तो, घर के लोग फ्रिज़ ले आएँ तो उससे आपको क्या नुकसान है? वे कहेंगे, 'बर्फ वाला पानी पीओ'। तो अगर आपको वह नहीं पीना हो तो आप मना कर सकते हो। घर के लोग रेडियो, फोन का उपयोग करते हों तो उससे आपको क्या लेना-देना? क्लेश होगा तो उन्हें होगा, आपको क्या लेना-देना? सिर्फ यह पंखा एक ऐसी चीज़ है जो खुद को असर करती है।

जिसे ऐसी किसी बाह्य उपाधि (चीज़) की ज़रूरत नहीं होती और फिर भी वह वैसा करे तो भी हमें हर्ज नहीं है। अपना मार्ग कैसा है कि आपत्ति रहित मार्ग है। वह तो, जहाँ मानता है वहीं पर है और वह कहेगा, 'हम बिना पंखे के नहीं रह सकते।' आप कहना, 'ठीक है, ऐसा ही होता है'। 'हो सके तो पंखा ले आना,' ऐसा कहना आप। जिसे जो चाहिए, उसे उस चीज़ की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : आरामपसंद नहीं बनना है, ऐसा कहा आपने?

दादाश्री : बाहर की सुविधाओं के कारण आरामपसंद बन जाता है व्यक्ति। फिर जब सुविधाएँ नहीं होती तब परेशान होता है। इस शरीर को तो आप जैसा रखोगे न, वह वैसा ही रहने को तैयार हो जाएगा।

नेसेसिटी नहीं है, यह तो जान-बूझकर आदत डाली है हमने। गलत आदत डाल दी पंखे की। तो बल्कि मैं ठंडा पड़ गया, उसके बाद से! यह भी कोई तरीका है? और जब अहमदाबाद जाते हैं तब एयर कंडीशन (AC) लगाते हैं। कहते हैं, 'दादाजी, मेरे यहाँ ठहरने वाले हैं।' तो वे लोग एयर कंडीशन लगा देते हैं। उन्हें पता नहीं है कि एयर कंडीशन की मुझे ज़रूरत नहीं है। मुझे तो ऐसा एयर कंडीशन चाहिए कि तेरे घर पर एयर कंडीशन हो लेकिन फिर सत्संग में जाते समय, वहाँ पहुँचने तक एयर कंडीशन रहे न, ऐसा चाहिए। जबकि इसमें तो बाहर निकलते ही वापस गर्मी... हम ठंडक में से बाहर निकलते हैं तब बाहर क्या होता है? तपते हुए अंगारे जैसा लगता है। तो यह क्या है? इसलिए भगवान ने कहा है कि आरामपसंद मत बनना। इसे आरामपसंद कहा जाता है।

इस शरीर को कुछ तो मज़बूत बनाना चाहिए न! बाईस प्रकार के परिषह सहन करने को कहा गया है। उसके लिए तो मैं मना करता हूँ, आपसे नहीं कहता हूँ। मैं वैसा कहूँगा तो आप सभी घबरा जाओगे, उसके बजाय तो नहीं कहूँ, वही अच्छा है।

बाह्य सुख का समभाव से निकाल वहाँ अंतर सुख

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यह शरीर बाह्य सुख ढूँढता है न?

दादाश्री : लेकिन हमें सुख नहीं ढूँढना है। हमें अंदर का सुख मिला है। जिन्हें अंदर का नहीं मिला, वे तो बाहर का ढूँढते हैं। जिसे अंदर का सुख मिल गया हो, उसे यदि बाहर का सुख नहीं होगा तो चलेगा या नहीं चलेगा? अंदर का नहीं मिला हो, उसे हमें कुछ नहीं कहना है। जिसे नहीं मिला है, वह क्या करेगा? लेकिन यहाँ पर तो भटकता ही रहता है बाहर। कितने लोग तो सिर्फ राह देखते हैं कि, 'यह हवा चली, हं यह चली, यह चली, यह चली।' यदि बंद नहीं होनी हो तो भोग ले, लेकिन कहता है, 'वह गई'!

मनुष्य में इस तरह की परवशता रहती है। देखो, भगवान ने बाईस प्रकार के परिषह सहन करने को कहा है। लिखा है या नहीं लिखा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, परिषह सहन करने को कहा है।

दादाश्री : हाँ। यह तो मैं आपसे कहता ही नहीं हूँ। आपके लिए तो सिर्फ इतना ही है कि ज़रा ऐसा हो तो आपको अंदर उपयोग रहेगा। वर्ना उपयोग फिर बाहर ही भटकता रहेगा। ज़रा सी उमस हो जाए तो उपयोग बाहर ही रहा करता है। फिर भी यदि पंखा चल रहा हो तो उसे बंद मत करना। अगर है तो समभाव से *निकाल* कर लेना, लेकिन 'इसमें सुख है', ऐसा मत मानना। 'इसमें सुख है', ऐसा माना तो फिर, 'उसमें दुःख है', ऐसा मान लिया। अतः उपयोग दूसरी जगह पर जाता रहेगा।

एयर कंडीशन में से बाहर निकले हुए व्यक्ति की क्या स्थिति होती होगी, वह बताओ। ये पंखों-वंखों की खोज़बीन किसने की थी? यह तो फॉरेन वालों ने। किस तरह से? वह खोज़बीन उनके लिए है, अपने यहाँ वह घुस गई है। वर्ना अपने यहाँ तो सिर्फ राजा के वहाँ पंखे होते थे। बाकी सब जगह तो पंखे होते थे साधारण, वह भी यदि सेठ हो तो। वर्ना जो दिन भर काम करता है, उसे पंखा क्यों चाहिए? कुदरत तो हर प्रकार से आपकी हेल्प कर ही रही है न। जब हवा की ज़रूरत होती है तब मंद हवा भी चलती है, बाकी सब तरह की हेल्प (मदद) करती है और जितना पसीना निकलना चाहिए उतना निकलने

देती है। फिर अकुदरती जीवन जीएँ तो उसका अर्थ ही क्या है?

पंखे को पाव-आधा घंटा बंद करके और उपयोग में रहकर देखो, तो आपको पंखे की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जो उपयोग में रहता हो, उसे पंखे की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। पंखे की ज़रूरत तो जब तक बाह्य रहता है, तभी तक है। और फिर भी हम उसके लिए मना नहीं करते। चाहे तेरा बाह्य हो न, फिर भी तुझे, 'मैं आत्मा हूँ', ऐसा भान रहेगा तो बहुत हो गया। तब भी हर्ज नहीं है, लेकिन थोड़ा आगे बढ़ने में हर्ज क्या है? हर्ज है क्या?

बाह्य सुख कम होते ही मूल जगह पर आ सकते हैं

प्रश्नकर्ता : घर में जो कुछ चीज़ें होती हैं जब वे खराब हो जाती हैं, तब पूरी जान उसी में चली जाती है। मेरी बात करूँ तो सत्तर साल की उम्र तक फ्रिज़ का पता भी नहीं था। बाद में फ्रिज़ आया और एक दिन वह खराब हो गया तो पूरे घर को हिला दिया।

दादाश्री : हाँ, वह तो ऐसा ही होता है। ये सब आफतें हैं। *उपाधि* (परेशानी) अलग चीज़ है और आफत अलग चीज़ है। *उपाधि* तो साथ में लगी होती है और आफत तो मोल ली हुई होती है। आपको जो होता है वह स्वाभाविक है, ये सब तो आफतें हैं।

ज्ञान नहीं था तब हीराबा कहतीं कि, 'नल खराब हो गया है,' तो फिर मेरे लिए *उपाधि*। फिर (प्लम्बर को) बुलाने जाना, उसे लेकर आना, वह है *उपाधि*। वे ज़रूरत की चीज़ें हैं न? लेकिन ये तो गैरज़रूरी आफतें हैं! टी.वी. लाते हैं, फलाना लाते हैं, लोग कुछ कम लाते हैं क्या? आँखें खराब होती हैं और फिर आफत।

प्रश्नकर्ता : यह टी.वी. ऐन टाइम पर खराब हो गया तब आस-पास वाले सभी लोग... 'टी.वी. नहीं चल रहा?' टी.वी. नहीं चलता तब आत्मा-वात्मा सब उसी में।

दादाश्री : हाँ, सब उसी में। फिर भी हमारे द्वारा उसका तिरस्कार तो होना ही नहीं चाहिए न क्योंकि वह औरों को अच्छा लगता है, वे चाहे कुछ भी करे। अपने घर का बच्चा ही कुछ भी करता हो, तो क्या हम उसे मना कर सकते हैं? मना करोगे तो आपको द्वेष होगा।

जब उपयोग में रहते हैं तब कुछ भी नहीं रहता। उपयोग में रहते हैं तब ध्यान भी नहीं रहता कि यह गर्मी है या सर्दी है, ऐसा कुछ भी नहीं। बच्चा परीक्षा दे रहा हो और पंखे बंद हो जाएँ तो उसे पता भी नहीं चलता। वकीलों का जो कामकाज चल रहा होता है और जज अच्छी तरह से सुन रहे हों तो उस समय यदि पंखे बंद हो जाएँ तो उन्हें पता ही नहीं चलता। यह तो खाली बैठें कि पता चलता है। उसे 'बाह्य उपयोग' कहते हैं। भटकता रहता है। फिर भी मैं तो कहता हूँ कि कोई हर्ज नहीं। इतना सा ही, लेकिन कुछ करना। अपनी ये जो पाँच आज्ञाएँ हैं न, वे *उपाधि* रहने ही नहीं देतीं, ऐसी हैं। इनमें कुछ *उपाधि* वाला है ही नहीं। पाँच आज्ञा में रहता है न? पंखे चलाना लेकिन पाँच आज्ञा में रहना लेकिन इतना जान लेना कि, ये सारी चीज़ें भूल वाली हैं। मैं भी पंखा नहीं चलाता ऐसा नहीं है। मैं भी चलाता हूँ। अब इसमें से थोड़ा-थोड़ा कम करते-करते फिर मूल जगह पर आ सकते हैं।

अब, ये जूते पहनकर घूमते हैं और फिर एक दिन अगर रास्ते में कोई लुटेरा जूते ले ले और फिर धूप में चलना पड़े, तब रोड या

रेत पर क्या दशा होगी? अब किसानों के पैर अभ्यस्त ही हो जाते हैं। उन्हें तो कुछ होता भी नहीं और ज़रूरत भी नहीं है। कुदरत का नियम है कि जिसे जितना जो चाहिए न, वह उसे सेट हो ही जाता है। तो फिर हम उस नियम का लाभ क्यों न उठाएँ? कुदरत का नियम ही ऐसा है क्योंकि आप स्वतंत्र हो। कुदरत आपके अधीन है। आप कुदरत के राइट (अधिकार) बिगाड़ रहे हो।

मेरी संपूर्ण स्वतंत्रता मैंने देखी है, अनुभव की है। उसके बाद मुझे ज्ञान हुआ है।

मन को मनोरंजन तो तप में खंडन

जगत् क्या कर रहा है, कि खुद का दुःख निकालने के लिए दूसरे विषयों में पड़ता है। यानी उस दुःख को यहाँ से वहाँ धकेलता है, जगत् वही कर रहा है न! ज़रा सा दुःख पड़े कि (पूंजी) भुनाता रहता है न! भीतर कितना सामान भरा हुआ है! हम तो इसे (फाइल नं-1 से) कहते हैं कि इसे (दुःख को) भुगतो ही। (पूंजी को) भुनाकर खा मत जाना! पूंजी ऐसी की ऐसी अनामत रखनी है।

इन लड़कों से मैं पूछता हूँ, 'अरे, अंदर जब *उपाधि*-चिंता होती है तब क्या करते हो?' तो कहते हैं कि, 'समय बिता देते हैं सिनेमा-विनेमा जाकर।' यानी कि उसे गँवा देते हैं। जब तप करने का समय आया तब सिनेमा में जाकर मौज कर आते हैं। यानी सौ का नोट दो रुपये में दे दिया। हमें तो सौ का नोट हज़ार का हो जाए, ऐसा करना चाहिए। यानी ऐसा हो उस समय उन सभी के अंदर बैठे हुए शुद्धात्मा को देखना है। कुछ और देखना है या फिर अपने घर और रिश्तेदारों के प्रतिक्रमण करने चाहिए। अपने आसपास वालों को, सभी रिश्तेदारों को याद करके, रिश्तेदारों के साथ तो दखल हुआ ही होता है न? उन सभी के, पड़ोसियों के साथ हुए दोष देखो, तीसरा देखो, चौथा घर, पाँचवा घर, इस तरफ के घर। खाली समय में सभी के प्रतिक्रमण करना, ऐसा सारा आयोजन कर लेना चाहिए। सब कुछ साफ कर दिया तो साफ-सुथरा। आपको तो करना पड़ेगा। कोई और नहीं करने लगेगा न? यों क्या कोई और करने लगेगा? तो क्या वाइफ करने लगेंगी? वे अपना करेंगी या आपका करेंगी? अतः ऐसा सारा आयोजन करना पड़ेगा, तब वह तप कहलाएगा।

अपना तप यानी तप कैसा होना चाहिए कि तपना चाहिए, मन को तपाना है। यानी मन में जब वैसा टाइम आ जाए न, मन तपने लगे तब मन को खुराक चाहिए। उस समय तो उसे मीठा लगे, वैसी खुराक दे देते हो। फिर घर की कोई चीज़ याद करके उसे अंदर मन में डाल देते हो, या और कुछ डाल देते हो तो वह तप नहीं कहा जाएगा। तप तो उस समय आत्मा से जोड़ दें, आत्मा का शुद्ध उपयोग रखें, तो तप कहा जाएगा।

तप अर्थात् मन को पसंदीदा चीज़ नहीं देना, किसी और रास्ते पर ले जाना। मन को पसंदीदा चीज़ दे देते हो न?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी दे देनी पड़ती है।

दादाश्री : वह ठीक बात है। कभी-कभी में हर्ज नहीं है। वर्ना तप मिलेगा नहीं न ऐसा। आप कहते हो कि ऐसे में वहाँ होटल में ले जाकर मन को आनंद करवाओ, तो वह नहीं चलेगा।

आत्मज्ञान के बाद संतोष-तृप्ति

प्रश्नकर्ता : आधे लोगों को तो लोकसंज्ञा

की वजह से सब चाहिए होता है। इनके पास गाड़ी है इसलिए मुझे चाहिए, ऐसा होता है।

दादाश्री : नहीं, परंतु यह लोकसंज्ञा भी जो है, वह भीतर से खुद तृप्त नहीं होता, तब उत्पन्न होती है न! वर्ना तृप्त व्यक्ति को कोई भूख लगा नहीं सकता। मुझे अभी तक कोई भूख लगाने वाला मिला ही नहीं न! बचपन से मुझे रेडियो तक लाने की ज़रूरत नहीं पड़ी और किसलिए यह चाहिए? यह तो किस तरह की बुद्धि है? ऐसी भयंकर चक्रम होती है तब। अरे भाई, इतने सारे रेडियो (लोगों के सपनें) घूमते रहते हैं और तू यह नया रेडियो क्यों ले आया? ये सभी जीते-जागते रेडियो घूमते रहते हैं!

प्रश्नकर्ता : और उपर से वह चक्कर भी नहीं लगाता अपना।

दादाश्री : नहीं, भान ही नहीं है न! अब तो बच्चे भी यहाँ कान में लगाकर घूमते रहते हैं। यानी भान ही नहीं इनमें।

जब भीतर में लोभ पड़ा हो तब लोकसंज्ञा मिल जाती है। लोभ का प्रतिपक्षी शब्द संतोष है। पूर्वजन्म में कुछ किया हुआ हो, उससे उसे संतोष मिलता है। इस दुनिया का ज्ञान भी थोड़ा-बहुत समझ गया हो उसे संतोष रहता है और आत्मज्ञान हो वहाँ तो तृप्ति ही होती है।

अनंत जन्मों तक खुद ने भोगा हो उसे संतोष होता है। संतोष का सही अर्थ ही है, समतृष्णा! उसे कोई चीज़ नहीं चाहिए और नहीं भोगा हो उसमें तरह-तरह का लोभ घुस जाता है भीतर। यह भोग लूँ और वह भोग लूँ और फलाना भोग लूँ। न भोगा हो तब तक भीतर परेशानियाँ ही परेशानियाँ, विचार आते ही रहते हैं।

यह संतोष, वह क्या है? खुद पूरी तरह से भोग चुका है पहले। उसे संतोष रहा करता है। जिस बाबत में आप भोग चुके हैं, जिस किसी ने राजसुख, राजा का सुख भोगा हो, उसे अभी राज सौंप दें फिर भी पसंद नहीं आएगा। मन ही मन में ऊब जाएगा वह। 'अरे, तूने इस जन्म में तो नहीं भोगा।' तब कहेगा, 'नहीं, लेकिन मुझे वह पसंद नहीं है'। उसका पक्का हो चुका होता है इसलिए इस दुनिया में सुख भोगा है, उसे कुछ ज़रूरत नहीं।

बाह्य सुख की प्यास, जलन करे

देखो, सुख कहीं भी नहीं मिलता! इतने पैसे हैं, फिर भी पैसों में सुख नहीं मिलता, पत्नी है पर उससे भी सुख नहीं मिलता! इसलिए फिर बोतल मँगवाकर, ज़रा पीकर सो जाता है! सुख तो मनुष्य ने देखा ही नहीं है न! जीवमात्र क्या खोज़बीन रहा है? सुख ही खोज़बीन रहा है। क्योंकि उसका स्वभाव ही सुख का है। चित्तवृत्ति सुख ही खोज़बीनती है कि इसमें सुख मिलेगा, जलेबी में सुख मिलेगा, इत्र में सुख मिलेगा, सिनेमा में सुख मिलेगा। उसे चखने के बाद खुद तय करता है कि इसमें कुछ भी सुख नहीं है। फिर खुद उसे छोड़ता जाता है और आगे नया खोज़बीनता ही जाता है, लेकिन उसे तृप्ति नहीं होती। संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती। संतोष उसे कहा जाता है कि इच्छा पूरी हो जाए, तब संतोष होता है। खाने की इच्छा हुई फिर हम खाना खाएँ, तब संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती। तृप्ति यानी फिर से उस चीज़ की इच्छा ही नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : हमने किसी चीज़ की इच्छा की हो और हमें वह चीज़ नहीं मिले तब अंदर जलन शुरू होती है न?

दादाश्री : इच्छा, वही अग्नि है। इच्छा हुई यानी दीयासलाई जलाकर सुलगाना। फिर जब तक वह नहीं बुझती, तब तक जलन होती रहती है। इच्छा तीव्र है या नरम, उस पर जलन आधारित है। बहुत तीव्र इच्छा हो तो बहुत जलन पैदा होती है।

वास्तव में तो कुदरती नियम क्या है? आतंरिक सुख इस तरह लेवल में रहना चाहिए। आतंरिक सुख और बाह्य सुख लेवल में रहने चाहिए। शायद कभी, बाह्य सुख बढ़ा तो आतंरिक सुख कम हो जाता है और बाह्य सुख बढ़ा हो तो, इतना बढ़ा हो तो चलेगा, लेकिन यह तो ऐसा ही हो गया है (एकदम अप-डाउन)।

प्रश्नकर्ता : वह बहुत अधिक डिफरन्स (अंतर) है।

दादाश्री : यानी आंतरिक सुख रहा ही नहीं बिल्कुल भी। व्यक्ति मेड (पागल) हो जाता है और अत्यधिक जलन होती है। आरोपित भाव है न, इसलिए बहुत ज़्यादा जलन होती है।

बाह्य सुख बढ़ें तो जान लेना कि मरने वाला हुआ

आज का भौतिक विज्ञान 'आउट ऑफ बैलेन्स' (संतुलन से बाहर) हो गया है, 'नॉर्मेलिटी' (सामान्य स्थिति) से बाहर चला गया है, इसलिए 'पॉइज़न' (ज़हर) हो गया है। आज इस भौतिक विज्ञान से अपार बाह्य सुख हो गए हैं, जबकि दूसरी ओर अंतर सुख सूख गया है! अंतर सुख और बाह्य सुख, इन दोनों का कुछ 'इक्वल बैलेन्स' (समान संतुलन) होना चाहिए। थोड़ा-बहुत कम-ज़्यादा हो गया हो तो चलेगा, पर उसका अनुपात होना चाहिए। भौतिक सुख नीचे गया हो तो चला सकते हैं, पर आज तो आंतरिक सुख खत्म हो गया है! इस अमरीका में तो बिल्कुल खत्म हो गया है! वहाँ की प्रजा को तो बीस-बीस गोलियाँ खाएँ, तब मुश्किल से नींद आती है! अमरीका ने एक तरफ अपार भौतिक सुख प्राप्त किए हैं, जबकि दूसरी तरफ अंतर सुख खत्म हो गया! यह कैसा साइन्स! अंतरशांति तृप्ति देती है और बाह्य शांति से लोभ बढ़ता रहता है। जहाँ स्वार्थ बुद्धि है, वहाँ अंतरशांति नहीं रहती। मनुष्य अंतरशांति के लिए बाहर भागदौड़ करते हैं, पर इस तरह भागदौड़ से शांति मिलेगी? अंतरशांति हो तभी बाहर शांति मिलेगी। इसलिए पहले अंतर में सुख है वैसा श्रद्धा में आ जाना चाहिए, तब अंतरशांति मिलेगी।

ये बाहर के सुख बढ़ा दिए, चालीस लाख के फ्लेट लिए हों, खाने-पीने का अधिक मात्रा में हो, टोकरे भर-भरकर फ्रूट के हों, तब साहब को 'ब्लड प्रेशर' और 'हार्ट अटेक' आए हुए होते हैं और मेमसाहिब को डायबिटीज हुआ होता है! उन दोनों के मुँह पर डॉक्टर ने सीकी (पशुओं के मुँह पर बाँधी जाने वाली जाली) बाँध दी होती है! फिर यह सब खाए कौन? तब कहें, घर के वे चूहे, नौकर और रसोइया खा-पीकर गोल-मटोल हो गए होते हैं! 'फ्लेट' में जाओ तो जैसे श्मशान में नहीं आ गए हों! सेठ के साथ बातें करो तो भी निरे अहंकार से बात करता है वह। सेठ महँगे भाव की चाय पिलाते हैं, पर जब तक भावरूपी द्रव्य नहीं पड़ा है, तब तक चाहे जैसा सोलह आनी का सोना हो, फिर भी बेकार है। सेठ का मुँह देखें तो जैसे कि सेठ हँसना ही भूल गए हों, वैसा लगता है! यह बाह्य सुख की कैसी भेंट!

भगवान ने क्या कहा था कि अंतर सुख और बाह्य सुख का काँटा (तराजू) देखते रहना। अंतर सुख कम हो और बाह्य सुख बढ़े तो समझना

कि मरने वाला है। काँटा थोड़ा-बहुत ऊँचा-नीचा हो तो चला सकते हैं, पर यह तो अंतर सुख की डंडी बिल्कुल ऊँची चली गई, तब तेरी क्या दशा होगी?

नहीं अवलंबन बाहर का, वह आंतरिक सुख

प्रश्नकर्ता : इन दोनों को अलग कैसे समझा जाए कि यह आंतरिक सुख है और यह बाह्य सुख है?

दादाश्री : जब बाहर का अवलंबन नहीं हो और सुख बरते, तो वह आंतरिक सुख है और अगर चाय अच्छी आए और सुख बरते तो चाय के कारण बाहर से आया है। अगर ठंडी हवा आए और अच्छा लगे तो उसे बाहर से आया हुआ सुख कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम सुख और आनंद की यह जो परिभाषा समझे हैं तो उसका प्रमाण तो बाह्य सुख है। हमने यही देखा है और अपने पास यही प्रमाण है लेकिन अंदर का जो सुख है उसके अनुभव का हमें पता नहीं चलता कि किस प्रकार का है? उसका क्या प्रमाण है?

दादाश्री : मनुष्य सो क्यों जाता है? जब थकान लगे तब नींद आती है और थकान उतर जाती है। लेकिन साथ ही साथ मन में ऐसा लगता है कि आज बहुत अच्छी नींद आई। बहुत अच्छी अर्थात् खुद को सुख बरतता है। इन पाँच इन्द्रियों के दरवाज़े ही बंद कर दिए न, तब भी अंदर का सुख बरतता है। इसलिए तो लोगों को सो जाने पर अंदर सुख बरतता है। सो गया, तब सुख बरतता है। लेकिन वे सारे सुख आवरण लाने वाले सुख हैं। आत्मा को बोरे में डालकर सुख प्राप्त किया जाए तो वह गलत है, उसके बजाय तप करके सुख प्राप्त करना अच्छा है।

सोकर उठने पर सुख क्यों महसूस होता है? आत्मा है, उसमें से ही सुख आता है, उस अहंकार को सुख महसूस होता है।

यह बाहर की मशीनरी बंद हो जाए तो भगवान तो हाज़िर हैं, उनका सुख बाहर निकलता है। खुद अनंत सुख का कंद ही है। इसलिए अंदर का सुख बाहर निकलता है फिर। जब यह मशीनरी चल रही होती है तब वह सुख बाहर निकलता तो है लेकिन दिखाई नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : आत्मा का जो अंदर का आनंद है, उसका क्या प्रमाण है? स्पष्ट रूप से ऐसा कैसे पता चलेगा कि यह आत्मा का ही आनंद है?

दादाश्री : हम अपनी चीज़ जब दूसरों को दे देते हैं, उस समय पता चलता है। कोई दुःखी व्यक्ति हो तब हम अस्पताल में जाकर उसे कोई चीज़ दे आएँ तो उस समय अंदर आनंद महसूस होता है, वह अपना खुद का है। वह बाहर से नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : अपनी चीज़ औरों को देने से उत्पन्न हुआ न वह?

दादाश्री : (सामान्यतः) देने से तो दुःख ही होता है हमेशा। देने में सुख है ही नहीं। देने में सुख होता तो लोग सब कुछ दे नहीं देते? लेकिन देते समय जो आनंद होता है वह अंदर का आनंद है। उसे दुःख होना चाहिए, उसके बजाय सुख हुआ वह अंदर का आनंद है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें भी औरों को चीज़ देने का अवलंबन तो रहा न?

दादाश्री : अवलंबन का प्रश्न नहीं है। उसके बाद ऐसा करते-करते उसे समझ आएगा कि आंतरिक सुख किसे कहते हैं। यथार्थ आंतरिक

सुख कब आता है कि जब एकांत में बहुत दुःख हो न, उसे दुःख मानता है। कुछ देर दुःख में रहने के बाद अंदर उसे सुख बरतता है। बाद में अच्छा हो जाता है फिर। दुःख में कहाँ से सुख आया यह? नहीं-नहीं, एक घंटे से दुःखी-दुःखी था और कुछ देर बाद हम से कहता है कि, हाँ, अब कोई दिक्कत नहीं है, अब चलो। वह सुख अंदर से आया। अंदर से हेल्प करता है इसलिए फिर उसे ठीक लगता है बेचारे को। अंदर के सुख से ही जीवन जी रहे हैं लोग लेकिन वह चीज़ उनके अनुभव में नहीं है न।

अब, अगले जन्म में और कुछ नहीं चाहिए

मैंने कहा, 'आत्मधर्म और उनके संयोग, दो ही पुण्य में प्राप्त हों'। उसका यह (फल) मुझे मिला है और आप तो यह चाहिए और दो-तीन लड़के चाहिए और एक लड़की चाहिए और उनकी मैं शादी करवाऊँ और पछतावा करूँ और....

प्रश्नकर्ता : उसमें हमारा क्या दोष? आपका दोष। हमें पूर्व जन्म में क्यों नहीं मिलें आप?

दादाश्री : 'मुझे घड़ी चाहिए और टी.वी. चाहिए', वह टी.वी. भी लाए!

प्रश्नकर्ता : हाँ, परंतु आप पूर्व जन्म में मिले होते तो कुछ भी नहीं होता।

दादाश्री : अरे, मिले तो थे, परंतु आप माँगो ऐसे नहीं थे। आप कोई सीधे नहीं थे और पूर्व जन्म में मिले बगैर छठी पीढ़ी के चचेरे भाई होते होंगे आप? एक ब्लड कहलाता है! सात पीढ़ी होने के बाद नहाना-निचोड़ना नहीं है। सात पीढ़ी तक नहाना-निचोड़ना कहलाता है। यानी पूर्व जन्म में तो मिलें ही थे, परंतु आपको यह पसंद नहीं आई मेरी बात। 'संतान तो चाहिए न, ये तो साधु जैसे हैं', कहेंगे।

परंतु वह तो मुझे कितने ही जन्मों से उनके प्रति अभाव हो गया था न, इसलिए चीज़ें ऐसे ही, यही चाहिए। और कुछ नहीं चाहिए और अब भविष्य में तो यह भी नहीं चाहिए। कोट-वोट कुछ भी नहीं होगा, अगले (आने वाले) जन्म में तो क्योंकि इसे भी पहनने की परेशानी! फिर इस्त्री करने की परेशानी, धोने की परेशानी!

प्रश्नकर्ता : वह तो देखेंगे न! मिलो तो कहना हमसे, कि हम वे हैं!

दादाश्री : सब कुछ कहा था लेकिन आप सीधे कहाँ रहते हो फिर?

प्रश्नकर्ता : फिर से अगले जन्म में कहना, मिलेंगे तब।

दादाश्री : बहुत पक्के हैं! देखो न, कैसा प्रश्न पूछ रहे हैं इस तरह, पूरा खुलासा हो जाए ऐसा!

'कुछ भी नहीं चाहिए' तब सब मिलेगा

अब, आपको जिसमें खर्च करना है उसमें छूट है। आप भी अब टेन्डर भरो तो एकदम सही भरना, हाँ। अब, दो जन्म हैं। वर्ना, फिर मोटरें माँगनी हों तो मोटरें माँगनी, बंगला माँगना हो तो बंगला माँगना, वह सब कुछ आप में से कम हो जाएगा। किसमें से कम हो जाएगा? यह आपकी पूंजी हुई है न, उसमें से। ये आपकी अपनी रकम में से खर्च होगा और आप कहोगे, कि 'साहब मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।' तो जैसे यह शरीर प्राप्त हुआ कुदरती रूप से, वैसे वह खाने का भी कुदरती रूप से प्राप्त होगा। यानी एक पैसा भी आपकी मूल रकम में से नहीं जाएगा।

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, ऐसा कैसे हो सकता है? आपने शुद्धात्मा का *लक्ष* दिया है,

उससे पहले माँगा तो होता ही है न, कि ऐसा हो और वैसा हो ऐसा कुछ, मुझे कुछ भी न मिले, ऐसी तो किसी ने भावना की ही नहीं होगी। किसी ने कुछ भी न माँगा हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता न?

दादाश्री : नहीं, वह तो ऐसा माँगना नहीं पड़ता, अपने आप ही भीतर आशय होता है उस अनुसार मिलता है। अभी माँगने से नहीं मिलता। वह तो ऐसा ही बोलता है, कि 'सिर्फ शुद्धात्मा के अलावा कुछ भी नहीं चाहिए'। परंतु अंदर में आशय होता है। अंदर बुद्धि के आशय में होता है। यानी बुद्धि का आशय ऐसा हो तो हर्ज़ नहीं, कि भाई, शरीर मिलने वाला है, शरीर के लिए मिलने वाला है, तो जो हो वह। इस शरीर को जो अनुकूल आए वह आपको प्राप्त होगा। वह तो फ्री ऑफ कॉस्ट है।

पुण्य भुनाने की सिस्टम अलग रखी थी

बुद्धि के आशय में वीतरागता के अलावा मैं और कुछ भी लाया ही नहीं। बंगला, गाड़ी, घोड़ा, रेडियो, घड़ी कुछ लाया ही नहीं। उसके बावजूद भी हमें गाड़ी मिलती है। हम जानते ही थे कि संसार, सांसारिक माल, गाड़ी-घोड़ा और वैभव ये सब धर्म के बाय प्रोडक्ट ही हैं और वे भी फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) हैं। हम अपनी बुद्धि के आशय में कितने ही जन्मों से सिर्फ, धर्म ही लेकर आए थे।

इन सभी के जैसा पुण्य लेकर आया था, परंतु मेरा पुण्य होगा, इसलिए भुनाने की सिस्टम मैंने अलग रखी थी।

प्रश्नकर्ता : तो पाप-पुण्य के आधार पर ही सब कुछ है, वैसा हुआ?

दादाश्री : हाँ, परंतु जिसकी भावना में हो तो मिलता है। भावना में न हो तो नहीं मिलता। हमें देखो कुछ भी मिला ही नहीं न, कभी भी।

प्रश्नकर्ता : जी।

दादाश्री : यानी सारा पुण्यानुबंधी पुण्य ही लेकर आया था। कोई घड़ी नहीं पहनी। इस जमाने में, घड़ी न पहनी हो ऐसा व्यक्ति ढूँढ निकालना...

प्रश्नकर्ता : हाँ, मुश्किल है, दादा।

दादाश्री : सिर्फ आदिवासी (जंगल में रहने वाले) होते हैं और ये दादा हैं, दोनों हैं। उन्हें डर होगा जबकि मुझे दें फिर भी मेरे काम की नहीं। लाखों रुपये आए-गए परंतु घड़ी नहीं, रेडियो नहीं, कुछ भी नहीं। यह देखो न, पुण्य कितना अच्छा! मित्र लाकर ये रख देते थे और कहते थे, 'आपका खर्च नहीं, चलो'। वे सोचते थे खर्च होता है इसलिए नहीं लाते होंगे। इसलिए वे लाते थे, फिर दूसरा कोई आता था, उसे मैं कहता था, कि 'ले जा न, भाई'।

और घर पर 1936 के बाद कुछ नहीं लाया। बसाया ही नहीं और कुछ। एक अलमारी, एक पलंग, दो कुर्सी और एक तिपाई इतना ही रखा था और कुछ नहीं लाया, वही का वही है। जब देखो तब मित्र वही देखते थे। अब मुझे तो इसमें (आत्मा में) रंग लगा था, अन्य कोई रंग ही नहीं न!

हमारा फाउन्डेशन बहुत मज़बूत, इसलिए कुछ भी न हो तो चलता था। घर पर भी मैं कभी कुछ नहीं लाया। घर में कभी कुछ भी बसाया नहीं। स्वतंत्रता में सुख माना था, कि कोई ज़रा भी हमें ऐसे परवश न करें। यह तो सब निरी जंजाल है। यह तो क्या सुख है? चारा ही नहीं है, पर आप कहाँ जाओगे? ये सुख नहीं भोगोगे तब भी कहाँ जाओगे? इसलिए दु:ख भी भोगना

पड़ेगा और सुख भी भोगना पड़ेगा। कर्म में लिखें हैं न! हिसाब हैं न! यह ज्ञान मिलता है तभी सुख और दु:ख दोनों ही हों, वे बदल जाते हैं।

अक्रम मार्ग प्राप्त करने के बाद पुण्य का सदुपयोग

इन पुण्यानुबंधी पुण्यशालियों के लिए ऐसा मार्ग निकलता है न! ऐसा है न, यह पुण्य जागा है तो खाना-पीना सब घर बैठे आ मिलता है! इसलिए यह सब टी.वी. देखना है, नहीं तो खाने-पीने का ठिकाना नहीं हो तो पूरे दिन मेहनत करने जाए या टी.वी. देखे? यानी कि ये पुण्य का दुरुपयोग करते हैं।

इस पुण्य का सदुपयोग तो ऐसे करना चाहिए कि यह टाइम है वह आत्मा के लिए निकालना चाहिए। फिर भी टी.वी. नहीं ही देखना वैसा आग्रह नहीं है, थोड़ी देर देख भी लें, पर उसमें से रुचि निकाल देनी चाहिए सारी कि यह गलत है, यह देखते हैं वह।

यह अक्रम विज्ञान जानने के बाद टाइम नहीं बिगाड़ते। अच्छे काम में उपयोग करते हैं फिर। टाइम का आयोजन हो जाना चाहिए। एक मिनट टाइम कैसे बिगाड़ सकते हैं? हम निरंतर उपयोग में रहते हैं, निरंतर। मनुष्य का जन्म, जन्म किसका? मानव शरीर और उसमें रेडियो सुनने का टाइम मिलता है तुम्हें? मुझे तो कभी नहीं मिला क्योंकि एक मिनट भी बेकार नहीं जाने देने वाले मनुष्य हैं। उपयोगपूर्वक रहते हैं। कोई भी उपयोग, अज्ञान उपयोग था, परंतु ऐसा तो नहीं। यह लड़कपन (नासमझी) नहीं। यह तो होता होगा हमें?

मनोरंजन या आत्मरंजन?

दो प्रकार के रंजन : एक मनोरंजन और एक आत्मरंजन। मनोरंजन से आकुलता-व्याकुलता नहीं जाती। वह तो ज़रा आकुल और व्याकुल रहता है। मछली को पानी से बाहर डाल दिया हो न तो तड़पती रहती है, ऐसी तड़फड़ाहट जीव मात्र को अंदर होती है, पूरे दिन। यों छोटे बालक को भी तड़फड़ाहट रहती है।

जगत् ने आत्मरंजन चखा ही नहीं है। सिर्फ मनोरंजन ही चखते रहे हैं। जहाँ देखो वहाँ मनोरंजन, मनोरंजन! मनोरंजन दो प्रकार के हैं। एक अधोगति में ले जाएँ ऐसे, ये सिनेमा और ये सभी कुसंस्कार। और अच्छे संस्कार वाले मनोरंजन भी होते हैं, वहाँ धर्म की बातें हो रही हों या ध्यान की बातें हो रही हों, वे ज़रा ऊँची गति में ले जाने वाले, अच्छे संस्कार वाले हों लेकिन वह मनोरंजन कहलाता है। मनोरंजन से मन खुश हो जाता है, लेकिन अंतरशांति कभी नहीं हो सकती, आत्मरंजन कभी भी नहीं हो सकता। जब तक आत्मरंजन नहीं होता, तब तक आकुलता-व्याकुलता नहीं जाती। व्याकुलता से ये सारे दु:ख उत्पन्न होते हैं, और 'ज्ञानी' के पास निराकुलता से दु:खों का नाश हो जाता है। संसार अर्थात् आकुलता और व्याकुलता। कैसे अच्छा लगता है, वही आश्चर्य है!

यहाँ पर रियल की वस्तु है इसलिए आत्मरंजन होता है। बाकी सभी जगह मनोरंजन होता है, फिर जहाँ जाओ वहाँ मनोरंजन होता है। मनोरंजन यानी क्या, वहाँ पर खुश-खुश-खुश हो जाता है। ऐसे उछलकूद करता है, जैसे पानी उबल रहा हो वैसे। और फिर जब नीचे उतरे तब था वैसे का वैसा ही हो जाता है। यहाँ तो सब चेन्ज हो जाता है। पूरा बदल ही जाता है! व्यक्ति बदल ही जाता है!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

9 अगस्त (शनि) - **सत्संग** और **10 अगस्त** (रवि) - **ज्ञानविधि**

20 से 27 अगस्त (बुध से बुध) - **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण**

28 अगस्त (गुरु) - **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम** (गुरुपूर्णिमा के दर्शन)

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अंजड़	**(13 जुलाई)**	सुबह 9 से 4	अन्नपूर्णा भवन, पाटीदार समाज बायपास रोड.	9617153253
अंब (उना)	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	श्री हनुमान मंदिर, रामलीला मैदान, गुरु रविदास मंदिर के पास.	8146270998
अकोला	**(14 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	जिला परिषद हॉल, IMA हॉल के पास, सिविल लाइन.	9511211451
अजमेर	**(13 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 1	श्री अग्रवाल पंचायत, जनकपुरी गंज, फव्वारा चौराहा.	9460611890
अमरावती	**(10 जुलाई)**	शाम 5 से 9	दादाभगवान सत्संग सेंटर, युनियन बँक के नीचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ चौक.	9403411471
अहमदनगर	**(10 जुलाई)**	शाम 4 से 7-30	दर्शन छाया अपार्टमेंट, कुष्ठधाम रोड, सावेडी.	9422225475
आग्रा	**(13 जुलाई)**	दोपहर 2 से 5	यूथ हॉस्टल, महात्मा गाँधी मार्ग, संजय प्लेस.	9193191284
आलमबाग	**(13 जुलाई)**	दोपहर 3 से 7	यूथ हॉस्टल, आनंद नगर, बरहा रोड.	8885825819
आसनसोल	**(10 जुलाई)**	दोपहर 2 से 5-30	नंदी नियर बोरतोला हरिमंदिर, जमुरिया नंदी रोड.	7679186469
औरंगाबाद	**(10 जुलाई)**	शाम 5-30 से 9	निमिषा बँगला, पेंडकर हॉस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक, सेंट्रल बस स्टैंड रोड.	8308008897
बक्सा	**(10 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	चन्तापरा गाँव, पोस्ट - थामना, जिला-बक्सा.	6002103839
बरगढ़	**(10 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	अग्रगामी युवक संघ, गवर्नमेंट बस स्टैंड के पास.	7978010946
बरसुनी (पूर्णियाँ)	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1	निर्मला पेट्रोल पंप के पास, नेशनल हाइवे 31 (NH 31).	7488744604
बाड़मेर	**(10 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30	दिगंबर जैन मंदिर, मॉल गोदाम रोड.	9314209457
बेंगलुरु	**(13 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 4	महाराष्ट्र मंडल, 2nd क्रॉस, गांधीनगर .	9590979099
बालिकरिया (नलबारी)	**(13 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	बिश्वजित बरमन, गुनेस्वरी मेरेज हॉल के पास, पो-बालिकरिया, जिला-नलबारी.	9085405087
भिलाई	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	दादा दर्शन, मैत्री गार्डन चौक, पानी की टंकी के पास, मरोड़ा.	9407982704
भैयाथान (सूरजपुर)	**(13 जुलाई)**	दोपहर 12 से 3	सत्ती चोक, ग्राम - कोइलारी, पोस्ट और ब्लोक - भैयाथान.	9165606166
भोपाल	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	SAGE यूनिवर्सिटी केम्पस, सहारा बायपास रोड.	9826926444
भुवनेश्वर	**(20 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	रेड क्रोस भवन, केनरा बैंक के पास, यूनिट - 9.	7077902158
चंडीगढ़	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A.	9780732237
चास (बोकारो)	**(9 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	दादा भगवान ए टू जेड सेंटर, गांधीनगर.	7765045788
चेन्नई	**(10 जुलाई)**	दोपहर 2 से 5-30	फ्लेट नं - 3, पद्मावती अपार्टमेंट, 9 ब्रेथापेट रोड़, वेपेरी	7200740000
चित्तौड़गढ़	**(13 जुलाई)**	दोपहर 1 से 4-30	आईटेक, आई टी आई, 69-70 बालाजी नगर सेगवा हाउसिंग बोर्ड, सेंथी.	9829749481
दर्यापुर	**(13 जुलाई)**	शाम 4 से 7-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, बनोसा अकोट रोड.	7218133513

देहरादून	(10 जुलाई)	सुबह 11 से 3	1, अंतरिप विहार, C-12, भारतीय स्टेट बैंक के पास, क्लेमेंट टाउन, टर्नर रोड़.	9012279556
दमोह	(13 जुलाई)	दोपहर 1 से 4-30	आमचौपरा कन्या शाला, दमोह.	9926985853
धर्मशाला	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	टिक्का लेहसर, वेद मंदिर के पास, योल कैंट.	9805254559
धुले	(13 जुलाई)	शाम 4 से 8	साहेब निवास, प्लॉट नं 24, राजवाडे नगर (राधाकृष्ण नगर), चालीसगांव रोड.	9404970668
दिल्ली और गाज़ियाबाद	(6 जुलाई)	सुबह 10 से 5	शाह ऑडिटोरियम - 2, राज निवास मार्ग, सिविल लाइंस.	9310366956
गुवाहाटी	(13 जुलाई)	दोपहर 3 से 6	घर न. 47, जेपोरीगोग, कारबी नामघर पथ, गुवाहाटी.	9954821135
गोंदिया	(10 जुलाई)	दोपहर 1 से 5	बाजारटोला (काटी) गाँव.	8308777253
गोरखपुर	(10 जुलाई)	सुबह 11 से 3	103 E, रामनगर कोलोनी, गोरखनाथ.	9935949099
ग्वालियर	(10 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	K.S. मेमोरियल हाईस्कूल, गायत्री विहार कॉलोनी, पिंटू पार्क.	9926265406
हल्द्वानी	(13 जुलाई)	सुबह 9 से 11-30	जगन्नाथपुरम फेज़ - 1, हरिनगर, पोस्ट - हरिपुर नायक, कुसुमखेडा.	9412084002
हज़ारीबाग	(13 जुलाई)	दोपहर 3-30 से 6	उमा जनरल स्टोर, ओकनी, बड़ा शिव मंदिर रोड.	9798126101
हिसार	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	श्री हनुमान मंदिर बुधला संत सभा, बेजमेंट हॉल, सेक्टर-14, गेट नं-2.	9896871690
हुबली	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	श्री पाटीदार भवन, उणकल टिम्बर यार्ड, विद्यानगर.	9480370961
हैदराबाद	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	कच्छी भवन, रामकोटी, किंग कोटी, इडन बाग.	9849167229
इंदौर	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 4-30	श्री गुजरात समाज, 1, नसिया रोड, सरवटे बस स्टेंड.	9893545351
जबलपुर	(10 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	4th फ्लोर, सिविक सेंटर जलसा हॉल, समदारिया मॉल.	9425411965
जयपुर	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 5	वर्धमान भवन, पी एफ कॉलोनी के सामने, पानी की टंकी के पास, ज्योति नगर एक्सटेंशन.	8290333699
जलंधर	(10 जुलाई)	सुबह 9 से 1	C/O ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, पुराना रेल्वे रोड.	9814063043
जलगाँव	(13 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	झुलेलाल हॉल, R.R. विद्यालय के सामने, गुरुद्वारा के पास.	9420942944
जैतारण	(13 जुलाई)	शाम 4 से 8	उदावतो की पोल, लोटोती.	9413172239
जमशेदपुर	(13 जुलाई)	सुबह 9-30 से 3	वरिष्ठ नागरिक भवन केंद्रीय कार्यालय, लक्ष्मी नगर, प्रेम नगर पार्क मैदान, टेल्को.	9031292567
जोधपुर	(13 जुलाई)	दोपहर 2 से 6	नागरिक मण्डल भवन, नेहरू पार्क.	9828360301
झाँसी	(10 जुलाई)	दोपहर 3-30 से 7	नेचर केयर इंडिया वैलनेस सेंटर, दुर्गा मैरिज गार्डन के पास, रेबुलेशन जिम के सामने, द्वारका कॉलोनी.	9415588788
कटक	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	थियोसोफिकल सोसायटी, काली माँ के मंदिर के सामने, ओडिशा हाईकोर्ट के पास.	7978641069
काशीपुर	(13 जुलाई)	सुबह 8 से 11-30	जगदम्बा विहार कॉलोनी, द्रोणसागर रोड, काशीपुर, उधमसिंह नगर.	9457635398
कोल्हापूर	(12 जुलाई)	सुबह 11 से 3-30	महालक्ष्मी हॉल साईक्स एक्स्टेंशन, महागांवकर मार्ग, स्वयंसिध्दा शेजारी, शाहुपुरी.	7499898426
कोलकाता	(13 जुलाई)	सुबह 9-30 से 4-30	श्रीमद् राजचंद्र आत्म तत्व रिसर्च सेंटर, 19/2A - श्यामानंद रोड, बेलतला गर्ल्स स्कूल के पास.	9830080820
कटिहार	(10 जुलाई)	दोपहर 3 से 6-30	वोर्ड नंबर - 33, दुर्गापुर.	9931825351
कन्हाळगांव	(13 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	कान्हळगांव, ता - लाखनी.	9423175153

कानपूर	**(13 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 4-30 124/172, सी ब्लोक, गोविंदनगर, दीप होटल के पास.	9140202636
कान्हाटी	**(12 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30 यशवंतराय मंदिर हॉल, ग्रामपंचायत इमारत के पीछे, कान्हाटी.	9766680152
खरगोन	**(13 जुलाई)**	दोपहर 12 से 4 23, हनी होम, संत कृपा नगर, खंडवा रोड, खरगोन.	9753141714
लखनऊ	**(13 जुलाई)**	दोपहर 3 से 7 यूथ हॉस्टल, आनन्द नगर, बरहा रोड, आलमबाग, लखनऊ.	8885825819
लुधियाना	**(10 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30 170 F - नकिचलू नगर, लुधियाना.	9465051163
लेडो (तिनसुकिया)	**(11 जुलाई)**	शाम 5 से 8-30 मेईन बाजार, दुर्गा कालीबारी, लेडो.	8638802416
मुंबई	**(10 जुलाई)**	शाम 4 से 8 मुंबई त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनव नगर रोड, काजुपाड़ा, बोरीवली-ई.	9323528901
मैनपुरी	**(13 जुलाई)**	शाम 4-30 से 8 दादा भगवान सेंटर, रामदेवी कॉलोनी, राधा रमण रोड.	9410632963
मालदा	**(13 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30 सुकांता पाली, पो-रतुआ, मालदा.	7908922840
मुजफ्फरपुर	**(13 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 1 सरस्वती नगर मेन रोड, गणेश विवाह भवन के पास.	9546369259
नागपुर	**(13 जुलाई)**	सुबह 9 से 1 कच्छी व्हिसा ओसवाल भवन, लक्कड़गंज.	9403399377
नवादा	**(13 जुलाई)**	दोपहर 12 से 4 दुर्गा स्थान के पास, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड.	9304665439
नाशिक	**(13 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30 आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी.	9822683945
नांदेड़	**(10 जुलाई)**	दोपहर 12 से 3-30 घर नं-16, महावीर सोसाइटी, नारायणी हॉस्पिटल रोड, शिवाजी नगर.	9960043888
निमापड़ा	**(6 जुलाई)**	शाम 5 से 8 चैतन्य निवास, कोणार्क रोड, निमापड़ा.	9778329738
पाली	**(10 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7 वैद्य नाई पंचायत बगेची, पुराना बस स्टैंड, पाली.	9252065202
पटना		अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	7352723132
पानीपत	**(10 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 1-30 मनोरंजन केंद्र, एन. एफ. एल. टाउनशिप, जी. टी. रोड.	9817002717
प्रयागराज	**(13 जुलाई)**	सुबह 11 से 3 होटल कॉस्मोपोलिटन, 13/15 कूपर रोड, सिविल लाइन्स, दृष्टि IAS कोचिंग के पास.	8840106094
पुणे त्रिमंदिर	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 5 पुणे-सातारा रोड, वर्वे बुद्रुक, पुणे - 412205	7875740566
फोंडा(गोवा)	**(12 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30 होटल यशोदा डीलक्स, पुराने बस स्टेंड के पास.	8698745655
रायपुर	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 4 दादा दर्शन, गुजराती लुहार समाज भवन, अशोक विहार कॉलोनी के पास, रिंग रोड 2, गोंदवारा.	9179025061
राजनगर खास (चंबा)	**(10 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30 दादा भगवान सत्संग केन्द्र, राजनगर खास, चंबा.	9418655529
रांची	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1 305, तीसरी मंजिल, पर्ल स्कायर, बरलाल स्ट्रीट, रांची एक्सप्रेस के पास, अपर बाजार.	9304077199
शाहपुर (डालटनगंज)	**(13 जुलाई)**	सुबह 10 से 1 कुम्हार मोहल्ला, बैंक ऑफ़ इंडिया के पास में.	6200738415
सतारा	**(13 जुलाई)**	सुबह 11 से 5 929, आदर्श अपार्टमेंट, भावे सुपारी के पास, शनिवार पेठ.	7350998503
सांगली	**(13 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 6 23 - एकता कोलोनी, मार्केटिंग कमिटी हाउसिंग सोसायटी, रेलवे स्टेशन के पास.	9209416948
सिद्धार्थनगर	**(10 जुलाई)**	शाम 4-30 से 8 ग्राम हरदासपुर खास, पोस्ट शिवपतिनगर, थाना मोहाना.	7376065054
सोलापुर	**(13 जुलाई)**	दोपहर 12 से 6 B-41 ऐशानी बंगलो, निखिल थोबडे नगर, वसंत विहार, साई सुपर मार्केट के पीछे.	9284188494
उदयपुर	**(13 जुलाई)**	दोपहर 2 से 5-30 1462 छोटी नोखा, कुम्हारों का भट्टा के अंदर.	9414538411
उज्जैन	**(13 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 1 होटल साईं पैलेस, राजकुमार होटल के पास, फ्रीगंज.	9826487407
वाराणसी		अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	9795228541
छपरा मेध (मुजफ्फरपुर)	**(13 जुलाई)**	सुबह 11 से 5 छपरा दूधनाथ मंदिर रोड, पो - छपरा मेघ.	9608030142

Atmagnani Pujyashree Deepakbhai's USA - Canada Schedule - 2025

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
20-Jun	Fri	6:00 PM	8:30 PM	**Satsang**	**(Toronto, Canada)** SVCC 1280 Dundas St W Oakville, ON L6M 4H9
21-Jun	Sat	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
21-Jun	Sat	4:30 PM	8:00 PM	**Gnanvidhi**	
23-Jun	Mon	6:00 PM	8:30 PM	**Satsang**	**(Ottawa, Canada)** Nepean Sportsplex 1701 Woodroffe Ave Nepean, ON K2G 1W2
24-Jun	Tue	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
24-Jun	Tue	5:30 PM	9:00 PM	**Gnanvidhi**	
26-Jun	Thu	6:30 PM	9:00 PM	**Satsang**	**(Chicago, IL)** YDS Chicago 540 South Martingale Rd Schaumburg, IL 60193
27-Jun	Fri	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
27-Jun	Fri	6:00 PM	9:30 PM	**Gnanvidhi**	
2-Jul	Wed	6:00 PM	8:30 PM	**Satsang**	**(Austin, TX)** Unity Church of Hills 9905 Anderson Mill Rd Austin, TX 78750
3-Jul	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
3-Jul	Thu	5:30 PM	9:00 PM	**Gnanvidhi**	
6-Jul	Sun	5:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**Gurupurnima (Jacksonville, FL)** Hyatt Regency Jacksonville Riverfront 225 E Coastline Dr Jacksonville, FL 32202
7-Jul	Mon	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
7-Jul	Mon	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
8-Jul	Tue	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
8-Jul	Tue	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
9-Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	**Gnanvidhi**	
10-Jul	Thu	8:00 AM	9:30 AM	**Guru pujan, Aarti, GP message**	
10-Jul	Thu	10:00 AM	12:30 PM	**Gurupurnima Darshan**	
10-Jul	Thu	5:00 PM	7:00 PM	**Gurupurnima Darshan**	
11-Jul	Fri	11:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
19-Jul	Sat	5:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(San Jose, CA)** ELKs #522 Willow Glen Event Center 444 West Alma Ave San Jose, CA 95110
20-Jul	Sun	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
20-Jul	Sun	4:30 PM	7:30 PM	**Gnanvidhi**	

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

मुंबई : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 2 से 4 मई 2025

अडालज : PMHT शिविर : ता. 7 से 11 मई 2025

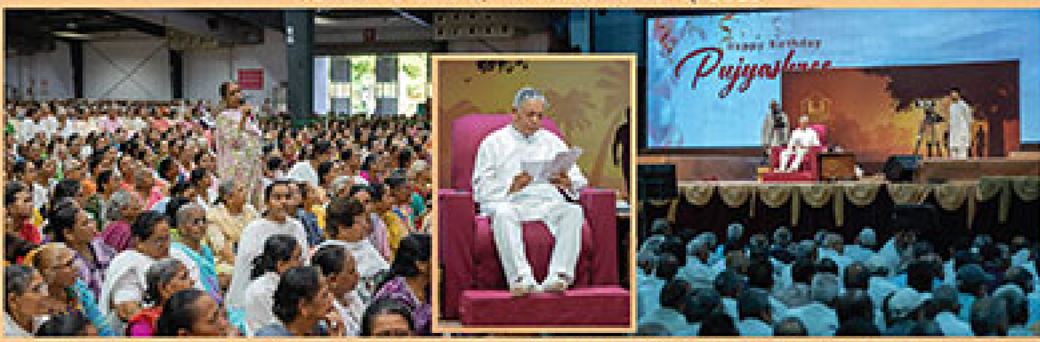

अडालज : पूज्यश्री दीपकभाई का 73वें जन्मदिन का उत्सव : ता. 9 मई 2025

जून 2025
वर्ष-20 अंक-8
अखंड क्रमांक - 236

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

बाह्य सुख और अंतर सुख का काँटा देखते रहो

भगवान ने क्या कहा था कि अंतर सुख और बाह्य सुख का काँटा (तराज़ू) देखते रहना। अंतर सुख कम हो और बाह्य सुख बढ़े तो समझना कि मरने वाला है। काँटा थोड़ा-बहुत ऊँचा-नीचा हो तो चला सकते हैं, पर यह तो अंतर सुख की डंडी बिल्कुल ऊँची चली गई, तब तेरी क्या दशा होगी? ये बाहर के सुख बढ़ा दिए, चालीस लाख के फ्लेट लिए हों, खाने-पीने का अधिक मात्रा में हो, टोकरे भर-भरकर फ्रूट के हों, तब साहब को 'ब्लड प्रेशर' और 'हार्ट अटेक' आए हुए होते हैं और मेमसाहिब को 'डायबिटीज' हुआ होता है! 'फ्लेट' में जाओ तो जैसे श्मशान में नहीं आ गए हों! सेठ के साथ बातें करो तो भी निरे अहंकार से बात करता है वह। सेठ का मुँह देखें तो जैसे कि सेठ हँसना ही भूल गए हों, वैसा लगता है! यह बाह्य सुख की कैसी भेंट! अंतरशांति तृप्ति देती है और बाह्य शांति से लोभ बढ़ता रहता है। जहाँ स्वार्थ बुद्धि है, वहाँ अंतरशांति नहीं रहती।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.